पानन घने घने। फूलमाल वारी किन सौरभ सँवारी किन येहो परिचारक समीर सुखसें सने। मौर धरि बैठो किन चतुर रसाल आजु आवत बसन्त ऋतुराज तुम्हें देखने १९ शीतल सुगन्ध मन्द वायुके सनाकवहे नभ मलहीनदेखि मन सकुचातहे। बनबिचशालग्राम किंशुक चसाकेअहे अलि भन्न भन्न भन्न धुनि गरजात हे। कोयलेनवीन बहुवृक्षन भनाकेसहे भन्ननसेंनीर हीर शुभ सरसातहे। चित्तनपै सुखहित आनँदतमाके रहे वाहवाहवाह ऐसी ऋतुपति जातहे २० छलकत छबि फूलनसें गलकत मकरन्द आली ललकत ललामी रबिभौंर सें लजायोहे। लहकत समीर त्रिविध बहकत कोकिला बैन चहकत चिरैया सब आनँद बढ़ायोहे। ठनकत चौरसी अरु भनकत नूपुर धुनि धधकत मृदङ्ग ताल रङ्गसें लजायोहे। हरषत सुरेश मन भभकत महेश जू को गमकत नगारे सो बसन्तऋतु आयो हे २१ ॥ सवैया ॥ आये बसन्त अनन्दित भे मकरन्दित ह्वैके पसाराकरें। अरु बौरेरसालपै कोयल बैठिके धीर धरें न पुकाराकरें। पतिहीनतिया जे हतीं घरमें तिन को बिरहानल जाराकरें। पियप्यारेहमारे मिलेसजनी वे पपीहापरे भखमाराकरें २२ मोतिनचौकपुराइ घनी गनी गायनैवार बधून बोलाइहो। रङ्गबिरङ्गकेलें लै कुसुम्भ उमङ्गसें मालिनि सें गुँथवाइहो। द अवधेश द्विजेशन को धन कञ्चन के घट दीप धराइहो। साजिके साज समाज भलीबिधि आजु लला के बसन्त

बधाइहो २३ कल गुञ्जत कुञ्जन पुञ्ज मलिन्द पियैं मकरन्द अनन्द भरे। द्रुमबौरत कैलिया कूकैकरैं बहै सौरभ सीरीसमार हरे। वहितन्त बसन्त को भावैनहीं गुरुदीन जऊलसै कन्तगरे। निशिबासर नींद औ भूख हरी मुखपीरी परी दल पेरैपरे २४ ॥ कवित ॥ कूकि उठीं कोकिलान गुञ्जिउठीं भौंर भीर डोलिउठे सौरभ समीर सरसावने। फूलि उठीं लतिका लवंगनकीलोनी लोनी झूलिउठीं डालियां कदम्ब सुखपावने। चहकि चकोर उठे कीरकरि शोरउठे टेरि उठीसारिका बिनोद उपजावने। चटकि गुलाबउठे लटकिसरोज पुञ्ज खटकि मराल ऋतुराज सुनिआवने २५॥ सवैया ॥ प्रथमैं बिकसे बनबेरी बसन्त के बातनते सुरझाइहुती। द्विजदेवजूताहूपै देहसबै बिरहानल ज्वालजराईहुती। यह सांवरे रावरेनेहसों अंगन प्यारी नजो सरसाईहुती। तापै दीपशिखासीनई दुलही अवलोकिबे को न बुझाइहुती २६ चाहि है चित्त चकोर दवाग्नुति आपनो दोषपरोसिनैं लैहै। ये दृग अंबुज से अकुलाइ कलाबिध बंधु कि हाइ अचैहै। ऐसी कसामसीमें द्विजदेव अली अलिके गनगाइ सुनैहै। ह्वै है सो कौन दशातनकी जोपै भौन बसन्तलौं कन्त न ऐहै २७बागनिबागनि ह्वै कै परागलै ज्यों ज्यों बहै यह बैहरि झूकन। त्योंत्यों परी परचराडसहा परमेशउठै बिरहागिनि भूकन। कन्त बिदेश बसन्तसमै हियरा हहरान लग्यो अब हूकन। नेहभरो सिगरो तन जारिकै कैला

किये यह कौलिया। कूकन २८ फूले अनारन पैहिलू
डारन देखतदेव महा उरमाचै। माधुरी झौरन आंबके
बौरन भौरनके गनमन्त्रसे सांचै। लागिरही बिरहीजन
के कचनारन बीच अचानक माचै। सांचेहुंकारै पुकारै
पुखी कहिनाचे बनैगी बसन्त की पांचै २९ ॥ कबित ॥
आयो ऋतुराज आज देखत बनैरीआली छायो महा
मोद सो प्रमोद बनभूमि भूमि। नाचत मयूर मद उ-
न्मद मयूरन को मधुर मनोज्ञ मुख चाखैं मुख चूमि
चूमि। पण्डित प्रवीन मधुलम्पट मधुप पुञ्ज कुञ्जनमें
मञ्जरी को खेत रस धूमि धूमि। हेली पौन प्रेरित
नवेलीसी द्रुमन बेलिफैली फूल दोलनिमें झूलि रही
झूमि झूमि ३० बल्लोको बितान मल्ली दल को बि-
छौना मंजु महल निकुञ्जहै प्रमोद बनराजको। भारी
दरबार भिरी भौंरनकी भीर बैठी मदन दिवान इति-
माम काम काज को। पण्डित प्रवीन तजि मानिनी
गुमान गढ हाजिर हुजूर सुनि कोकिल अवाज को।
चोपदार चातक बिरद बढ़ि बोलैं दर दौलत दराज
महराज ऋतुराजको ३१ चन्दन चमेली चाप चौसर
चढ़ाय चारु मधुमदनारेसारे न्यारेरसकारेहै। सुगति
समीर मदस्वेद मकरंद बुन्द बसन पराग सो सुगन्ध
गनवधारेहै। बारन बिहीन सुनि मंजुल मलिन्द धुनि
बलदेवकैसे पिकवारेलाजहारेहै। फूलमालवारे रति
बल्लरी पसारेदेखो कन्तमतवारेकी बसन्तधूमधारेहै।
३२ फूलीमंजु मालतीनपै मलिन्द वृन्द बर सुरभित-

पैट्यो मन्दमधुर वहैसमीर। ललित लवंगनकी बल्लरी तमाल जाल लतिका कदम्बनकी देखे दूरिहोतपीर। बौंड़ी गुञ्ज पुञ्ज अति भौंड़ी भुकि भावयोवन कोकी कुलकलित कपोत पिकबोलै कीर। भरे प्रेम श्यामा श्यामगरे भुज धरे दोऊ हरेहरे डोलतहैं तरणि तनजा तीर ३३ चरचत चांदनी चयन चैन चुयो परै चौंधा सोलग्योहै चारोंओर चित्तचेतना। गुञ्जत मधुपवृन्द कुञ्जन में ठौरठौर शोर सुनिसुनिरह्योपरत निकेतना। राम सुने कूकन करेजो कसकत आली कोकिल को कोऊ मुख मूंदि अब लेतना। अंतकरेडारत बसन्तहि बनाय हायकन्तहि बिदेशते बोलाय कोऊलेतना ३४ बरवै ॥ पात पात करि ढूंढ्यो सबबनबीनि। घटहि हुते मोबालम पर्यौनचीनि। बालमसुरति बिसरिगौकहत संदेश। सकहु पथिक न बहुरा कस वहदेश।बालम की सुधिआवत यहगति मोरि। निकसि निकसिजिय पयसत ज्यों चकडोरि। पातपात करलूटिसि बिपिन समाज। राजनीति यह कसि कसि कस ऋतुराज ३५॥ सवैया ॥ बसुधाधर में बसुधाधर में औ सुधाधर मेल्योसुधामेंलसै। अलिवृन्दन में अलिवृन्दन में अलि-वृंदनमें अतिशौ सरसै। हियेहारन में हरहारन में हिमि हारनमें रघुराजलसै। व्रजवारन बारन बारन बारनबार-नबारबसन्त बसै ३६ वृक्षन बल्लीचढ़ी करि चोप अली अलिनी मधुपी मुदकारी। कोकिल सारिका कीर कपोत करैं धुनि माधुरी कानन चारी। फूले सबैबन

बाग तड़ाग भरे अनुराग पिया अरु प्यारी। चैन में चारु बिहारुकरे दशरत्थकुमार बिदेह कुमारी ३७ कबित्त ॥ सन सन डोलै पौनसन सन सूखो सन सनसन अंग दुखसन होत हरि घरी। बनबन बीनिलीन्होंबन बन ब्योरि ब्योरि बनत न बरणात क्योंहूं उरधरधरी। लेखराज ऊंखऊ पियूष सों बिशेष राखि नाहिं अन- मेख देखिदेखिकरकरबरी। अबअरबरी शरबरी मिलै कैसे कन्त अरहरी अरहरी अरहरी अरहरी ३८ बन बने बानिक मोंबरण बरण फूले लोकनाथ ललित ल- तान छबि छाईहै। मंजु मंजु मंजरीन गुञ्जत मधुपपुञ्ज कुञ्जनमें कोकिला की कीकनि सुहाईहै। होरी होरी करत किशोरी दौरी खोरी खोरी गोरी चलतहांबल्ल बल्ल सुखदाईहै। लटकि लटकि कान्ह बांसुरी बजा- वत है येरी चलि देखिये बसन्त ऋतुआईहै ३९ रूस- नमें दूसन में लालमनमूसन में मैन की मसूसनमें धोर कैसे रैहैरी। कोकिलकी कूकनि में पैान मन्द भूकनि में औसरकी चूकनिमें फेरि पछितैहैरी। बेलिन नवे- लिन में संगकी सहेलिन में खेलिनमें केलिनमें मनसा समैहैरी। वृन्दावन कुंजनमें फूलनके पुञ्जन में भोंरन की गुञ्जन में भूलि मान जैहैरी ४० ॥ सवैया ॥ को- मल कञ्जन की कलिका अलिकाहेन चित्त तहां त रमायो। मञ्जरीमंजु रसालनकी तिनको रसक्यों नहिं तो मन भायो। फूलतीं औरै अनेक लता हरिदास जू आयोबसन्त सोहायो॥ छोड़ि गुलाबन को बनतूकट-

मैरुवापै किहि कारण आयो ४१॥ कबित्त॥ गुञ्जरन लागी भौंर भौंरैं केलि कुञ्जन में कैलियाके मुखते कुहूकनि कढ़ैलगी। द्विजदेव तैसे कछु गहब गुलावन ते चहकि चहूंघा चटकाहटि बढ़ै लगी। लागो सरसावन मनोज निज ओजरति बिरह सतावनकी बतियां कढ़ै लगी। होन लागी प्रीति रीति बहुरि नईसी नवनेह उनईसी मति मोहसो मढ़ैलगी ४२ प्रथम बसन्त पिय आवनकी आश है जो आवत हों आवैं तो बुलाऊं करजोर जोर। नाहीं तो समीप होनपावैं ना बहारदार शिशिर पुकारो राखो याको मन मोर मोर। परसि पलाशन रसालन प्रसूनबेलि खिलन न पावैं अलिकीजै कृपा थोर थोर। बचूराम त्रिबिध समीर बेग दूरिकरो भृङ्गी पिक हटको न शोर करैं घोरघोर ४३ बीथिन सघन अति बीथिनमें बोलैंपिक तैसई रह्यो है घेरि बिरहा इतै उतै। दूजे भई केसरि समान भुवि पीतमयी पहिरे बसन्ती चीर सखियां जितै तितै। सोरी सुखदायक समीर लै प्रसून बास आवत हमारे हिय बेधत जितै जितै। बचूराम बावरी भईहैं मैं बिहारीबिन पीलीभई देह पीलीपीली को चितै चितै ४४॥ सवैया॥ मिलि माधवीआदिक फूल केब्याज बिनोदलवा बरसायोकरैं। रचि नाच लता गन तानि बितान सबै बिधि चित्त चुरायोकरैं। द्विजदेवजू देखि अनोखी प्रभा अलि चारन कीरति गायोकरैं। चिरजीवो बसन्त सदा द्विजदेव प्रसूनन की

झरिलायो करै ४५ ॥ कबित ॥ कोकिल नकीब औ पपीहा चोबदार दार भवँर नफीरैंकीरें मंदमंदगायो है। गुटक कपोत गोत ताल मानो तबलन की अबलन की जाति भांति मोरवा नचायोहै। तूतो तालदेत भाव भायत भुजंगी भेद चातक उतारैं राई लोन की बनायोहै। मदन महीपतिके मनीराम माघसुदीपंचमी को व्याहन बसन्त ऋतु आयो है ४६ गावैं राग बाणी बरमानी सुधासानी मुनिमोहै सब ज्ञानीध्यानी ध्यानी अलसन्तरी। केसर कुसुम्भ रंग कंचनके जन्त्र भरे झारीभरिरोरी औगुलालबरसन्तरी। चोवा और अतर फुलेलके फुहारे चलैं मलैंदेव मीड़ैं मुख मुरसोह सन्तरी। मनीराम माघसुदी पंचमी पियारे कान्ह साजि ब्रजराज आजु खेलत बसन्तरी ४७ ॥ सवैया ॥ जादिनते परदेश गयेपिय तादिनतेतनुतापसी दौरत। आवते बेगिइतै नँदरामजू देखते बागबसन्त समौरत। चन्द उदोत न होतउतै अरविन्द मलिन्दके वृन्दनझौरत। याही अँदेश महामन में सखिका वहिदेश नहीं बन बौरत २४८॥

ग्रीष्म ऋतु के कबित्त व सवैया २॥

कबित ॥ ग्रीषम प्रचण्डघामचण्डकर मण्डल ते उमड्यो है देव भूमि मण्डल अखण्ड धार। भौनतेनिकुञ्जभौन लहलही डारनह्वै दुलहीसिधारी उलहीज्यों लहलही डार। नूतन महल नूल पल्लवन छ्वै छ्वै सेद लवनिसुखावत पवनउपवनसार। तनकतनक मणिक-

नक नुपुरपाय आयगई झनकभनक झनकायेबार१॥
सवैया॥ ग्रीषमर्मे तपै भीषम भानु गईबनकुञ्ज सखीन कोभूलसों। घामतेकामलता मुरझानी बयारिकरैंघन-श्याम दुकूलसों। कम्पति औ प्रकटे परस्वेद उरोजन दत्तजु ठोढ़ी के मूलसों। ह्वै अरबिन्द कलीन पै मान झरै मकरन्द गुलाब के फूलसों २॥ कवित्त॥ भरियत गहरे गुलाबहद हौदन सुधरियत रजत फुहारे तदबीर के। ढरियत ढारन सुढारन नहरनीर दरियत घनसार शरद गँभीरके। करियत तर अतरनसों बिछौना क-बिशोभजू उघरियत बातायनतीर के। चन्दन पलँग अरबिन्दनकी सेजपर सुन्दरि सिधारी आज मन्दिर उशीर के ३ बर्बरात बेहरि प्रचगड खगड मराडल पै दर्बरात धूपनकी द्युतिपीनअर्फरात। झर्भरातपवनके झोकआये अर्भरात खर्बरातपातपात वृक्षनते झर्फ-रात। भर्भरात भामिन भवन मांझ बैठी जाय हर्बरात हायहाय पीवपीव बर्बरात। कहैं बचूराम छिनछिन-कर्मे चुर्भुरात जलबिन मीन जैसे सेजहूपै फर्फरात ४ प्रीतम न आये जाय कुबिजा गृह छाये ऊधो पाती लै आये यहां ग्रीषम की हूकहै। पवन झहराने धूल लागी फहराने अबकाम शरताने हिय बेधत अधूक है। सूर्य्यकी चमक दूजेघामकी धमक तीजे लूहकी रमकलेउठत तन बूकहै। कहैं बचूराम चोली चोरना सुहाय अब बिना मिलेश्यामके कलेजा टूक टूकहै ५ सीरे तहख़ाने तामें खासे खसख़ाने सोंधे अतर गुलाब

की बयारैं रपटत हैं। भूधर सवाँरे हौद छूटत फुहारे और बारे भारे तावदान धूप दपटत हैं॥ ऐसेसमैं गौन कहु कैसे कै बनै तो प्यारे सुधाके तरङ्ग प्यारो अङ्ग लपटत हैं। चन्दन किवार घनसार की पगारदई तऊ आनि ग्रीषम की झार झपटत हैं ६ सीतल गुलाब जलभरि चहबचन में डारिके कमलदल न्हायबे को धसिये। अंकभरि प्यारीनेह नदिन सुदिनभरि बारिके बिहारतेन बाहिर निकसिये। कालिदास अंग अंग अगर अतरसंग केसर समीरनीर घनसार घसिये। जेठ में गोबिन्दलाल चन्दनके चहलन भरिभरि गोकुल के महलन बसिये ७ खासे खसखाने खासेखाने तहखाने न तछूटत सरोजकी सुगंध लपटीरहै। अतर अरगजे सों केसर गुलाब नीर छिरके किवांरद्वार झारझपटी रहै। कृष्णलाल जेठमें गमन कैसे कीजै प्यारे चन्दन सलैके पंक अंक दपटी रहै। ज्वाल उदभटी कुचवटी कामगटी तटीहटी मरहटी नटी लटी लपटीरहै ८ अमल अटारी चित्रसारी वारी रावटीमें बारह दुवारी में केवांरी गन्धसार की। कामानल छायरह्यो चांदनी बिछौना पर छबि फबिरही क्षीरसागर कुमार की। श्रीपति गुलाबवारे छूटत फुहारे प्यारे लपटैं चलत तर अतर बयार की। भयमा नेवारी घनसार भीजि सारीझार तऊना बुझानी नेक ग्रीषम के झारकी ९ चोवा चौक चांदनी चंदेवाचिकै चौकी चौक चम्पक चंपावली चमेली चारु चौजहै। खासेखस फरस उसीर

खसखानिन में पजन कपूर चन्दनादि करि चौज है । लालीलखि ललित ललीके लाल लोइनमें अमल गु-लावदल मलतउरोजहै । अवनिअशीतलपै ग्रीयमतपीत लपै पिय हाथहीतलपै शीतल सरोजहै १० ॥ सवैया ॥ शीतलता ते सिराने महा तहखाने नये खसखाने बने हैं । मैन सवांरे मनोते फुहारे अपारे कतारे छुटै अँगने हैं । श्री रघुराज तहाँ यदुराज सखीन समाज लै मोदसनेहैं । ग्रीयम जानि महै सुखदानि सुरुक्मिनिसों इति बानिभनेहैं ११ ऊँची अटानि अनन्द सों सोइबो सींचिबो सीकरसौरभसानै । मंजुमयंक मरीचिन सेइबो लेइबो तू अधरामृत पानै । श्री रघुराज सदा सुनिबो सजनीन समाजमें सुन्दर गानै । ग्रीयमको बिरहीन को भीयम तीखन तापको मानौबिलानै १२ ॥ कवित्त ॥ तातो होत तन और सूखिजाति मुख ज्योति अंग अकुलात चित्त अधिकी भवतुहै । जैयतु उसीर भौन लागत न नीको पौन ओला घनसारघनो चन्दन अमितुहै । सी-रेहूयतन याते कीनेहैं अनेकभांति तापर तिहारी सैांह दुखनाघटतुहै । जानत हैां ब्याप्यो तोहिं बिरह प्रसिद्ध आली नायक है काेऊ नाहीं ग्रीयम की ऋतुहै १३ चन्दन चहल चोवा चांदनी चंदेवा चारुघनो घनसार घेरिसींचमहबूबी के । अतर उसीरसीर सौरभ गुलाब नीर गजब गुजारैं अंग अजब अजूबी के । फेरन फबत फैलि फूलन फरश तामें फूलसी फबीहै बालसुन्दर सु-खूबीके । बिशद बिताने ताने तामें तहखाने बीच बैठी

खसखानेमें खजाने खोलि खूबीके १४ आंवाँसी अव
निधुंधी धूपरूप धूमकेतु आंधी अन्धकूपडारें लोचन
अनैसेके। जमक जलाकन की नाकन की लोह्न चलें
व्याकुल जगत सांझपावें जैसे तैसेके। लोकपति लूकसे
उलूकसेलुकतबेनी कुञ्जछाया जहांतहांछाइरहीऐसेके।
कोठरीतखाने खसखाने जलखाने बिनग्रीषमके बास-
र व्यतीत होंय कैसेके १५ धौंरहरधौल धूपधापहूंधसैं
न जामें चहुंघा दुआरके सुगन्ध सारशालासे। मणि
दीपमालामणि भूषणाजलितबाला खासेपरयंक बासे
सुमननि मालासे। व्यजन उसीर नीर मलयज सभोये
ह्वै परसत समीरहै सरस शीतकालासे। जिनहेत बिरचे
बिरञ्चि हैं मसाला ऐसे व्याथित न होतते निदाघजात
ज्वालासे १६ चन्दन चहल चित्रमहलहिदेश मोहेरस
बतियानसों प्रमोद सखियानमें। खासे खस फरश फु-
हारे फुही फैल फैल फैल भरशीतल समीर छतियान
में। गोरेगातसोहै गरे गजरा चमेलिनके गोहेबर सुघर
सहेली अति स्यानमें। गोदते उरोज कर परश गुलाब
जल छिरकत लाड़िलो लली की अंखियानमें १७
सुमन सवांरे भारे भौंरन उसीरवारे छूटत फुहारे नीर
वारेकी शलाकेरी। कहै गिरिधारी सची चन्दन की
पंक परयंक पर पंक कीन बहुरि चलाकेरी। ऐसे में
ललन परदेशको गमन कह्यो तरणिधरणिदेततरणि
तलाकेरी। चहुंओर अतर गुलाब सरबोरी सखी धाई
बरजोरीतऊ जेठकी जलाकेरी १८ धाईहैं धरणि धूप

दँदकि अँगार जैसे पवन प्रचण्ड लूक लागे दिशि द-
सते। बेगी द्रुम कूपताल कुण्डनके सोत सूखे स्खे भे
कुरंग देहफूंकै बोरि पसते। प्रीतम सुजानजान कैसेके
पयान कीजै शीतल सुगन्ध सींचिराखौ बोरि रसते।
तातकीकसाई बिन्त बहुतमँगाइदैहौं बँगलाछ्वायदैहौं
तुम्हैं खासेखसते १९ ग्रीषम तपत परचण्ड नवखण्ड
मध्यहूहभरे लालेलाकेलूहन लुकारेहैं। तीरकेसे तीक्षण
समीर सरसात आलीमानौ आजवरसत अंगनअँगारेहैं।
ऊबिऊबि आवै सांस ज्योंज्यों अध ऊरध उसासै उप-
सोयेकसो पूरण पनारेहैं। सूखे सर सरिता अपार जग
मोहनजू दिनविपरीते रीते नदी नद नारे हैं २० झांपैं
झुकी झपटैं झरोखनकी झांझरीकी झोंकन खुलैन
कहूं खसखसकी टाटीसों। आँगन के ऊपर अँगूरकी
लगायो लता छिरकै छबीली छीरछीटनकी छाटीसों।
आयोऋतुग्रीषम गरूरजग मोहनजू बगरिबगारयौ बार
बेलिनकी बाटीसों। अगर उशीरनीर सौरभसमीरसीरे
सुखद सवांरे सेजशीतल की पाटीसों २१ खासे खस
खाने सींचे अतर गुलाबनसों सीरे तहखानेचारु चंदन
चहलहै। कलित कपूरनके चौतरेचुनेहैं तौन मोदवारे
मालतीके मंजुल महलहै। पन्नाकेपलँग रँगपरदाफि-
रोजा धरे बेलनकी पांखुरीसों परण पहलहै। ग्रीषम
के गरमगरूर जगमोहनजू दूरदरशात इतचोवन चहल
है २२ गाढ़े गन्धसारन घनेरेघनसार आली घोरिघोरि
आजु मेरे बगर बगारिदे। त्योंही तहखानन में खासे

खसखाननमें अतर गुलाबके फुहारन फुहारिदे। बेली के बिछौना पै सिधारि साखिसलापान आछे मृगमद सों अमोद उदगारिदे। जौ लौं जग मोहन विराजैं इत बीर तौलौं बाहर सों बैठि बलिस्यजना सँभारिदे २३ घोरि घनसारन घनेरे गन्धसार आली भारन दै अमल अमोद अंगरागौना। खासेखसखानन खुसीस खुशबूके नीर नहरैं निराली नई रातौ दिन पागौना। शीतल रहैगो जगमोहन तपीत लागो गरस गरूर लैलैहीतल को भागौना। बाल कैसी पूतरी समेटि अंगमाल कोउ जौलौं नव बालकी रसाल उरलागौना २४ तावरीतपन ताप ज्वाला सों न बिरहीन छीन ह्वैरहीं हैं आपनो ईयेकुभावरी। भावरी सजन मध्यजासों सब राजीरहैं नेकलूह लपटसों घटना जरावरी। रावरी न मानिहै सनेह नेह मेरो कह्यो देहमें प्रवेशि बारि बाती को लगावरी। गावरी बजावरी सुबन्दी मनभावरीपै येरी बीर ग्रीषम तू मोहिं ना सतावरी २५ बिकल सकल जल थलनके जीवहोत जेठको जलाकनिमेंपुहुमीतपति है। सरिता सरोवर रसाल जलहीनभये सूखे तरुपशु-हूपखेरून बिपतिहै। ग्रीषम तपनि दूजे बिरह तपनि बाढ़ीतापै यह लपटि झपटि लपटति है। सीरे उप-चारन ते जारत अनंग अंग पिय बिन सान याको कैसें कै रहतिहै २६ ॥ सवैया ॥ आतप ताप तपै रविमण्डल तापित तात तताजल आजहै। तापित बायुबहैबड़सोखसो सोखित कूपतड़ागनलाजहै। भूमितचैतजि आपनो

भाव दुखी बन बालऊ ऊंख सुराजहै। हैं सहियीहू कलेशित बारि की शालिकराम सोग्रीषम साजहै२७ देखेपथी अति व्याकुल लूकसों वाहिहु देखि लजाय के भाजहैं। बेंडीहू घास जरीजड़ सों सब धंधेहू बन्द धनीन के काजहैं। मुंडपैभानु चितैं अति कोपित धूप धुपीली के बाजन बाजहैं। छोटी निशादिन भारीरहै द्विजशालिकराम सो ग्रीषमसाज हैं २८॥ कवित्त॥ सूबह असिसटंट सब निजसाजे मध्य रात्रि युगयास प्रभु तहसीलदारीहै। शालिग्राम डिपुटीकमिश्नरसोआंधी मानो आदि अन्तरात्रि यामसेक्टरा बिचारीहै। मन्द मन्द दिनघाम साहब कमिश्नर औ तेज मध्यदिनघाम फनासिल कारीहै। लूक के लपाकोसोतौ चीफग्रहै सबकेरो ग्रीषमके लाटकी सवारी अति भारीहै २९ द्वारन पै खसकेरी टट्टियां चुवतजल अन्दर सुपेदपरयंकहु तहांपरो। बालाकार भोजन जेंवायपति अति हित शालग्राम बर्फले सुराही मध्यतें भरो। पानन के बीराहू खवाय पतिखाय आपु मन्दमन्दमारुत डुलावैं नींद मेंगरो। सुख सरसात दिन दुखना दिखात कहुं बिधिऐसी ग्रीषमको दूरिना कबैां करो ३० दिनकर जोरतपैं घाम नहिं देखो जाय आंधी और आगने तो उचके निदादई। पन्थमों पथिकसब लूकसों मरतजात जीव अति व्याकुलीसों अईहो गिजालई। भोगी तहखानेपरे मारुत झुलावैं जन ताहूपर आबताब तनसों जुदाभई। धर्मकर्म आपने जनावैं जाके जैसेहोयँ शाल-

ग्राम ग्रीयमसों आजसों बिदाभई३१ ॥ सवैया ॥ देहतची बिरहानलसों अति ऊरध श्वासहि पौनबढ़ाई। मुक्तव-लाकनकी अवली बलदेव कहै सुखमासरसाई। श्याम घटासमकारी लटैं द्युति दामिनि त्यों बरदन्त न पाई। भीयसबुन्दगिरैं दुगसों ऋतुग्रीयममें बरषाऋतुआई३२ कवित्त॥ सुमनसुगन्धशुचि सुरभीसमीरसेत शीतलसमाज साज सकल बनायेहैं। नहर नदीनिकट खूबखसखाने जाने खिरकी झरोखा खोलि खासदानलायेहैं। तर करि चतर तमोल तान तामदान भान को समान सो प्रमानकै दुरायेहैं। द्विजबलदेव कहै बरफ बिछायबर बारिके फुहारे औ बितान बेलितायेहैं ३३ सुनतसना-के यमुना के नाके ताके सब ग्रीषमसे ढाके सुखमाके निजगातना। द्विज बलदेव जलदेव कलदेव कहै जल जल जात जल जात जल जातना। मन अनुमान हरि साजो यों समान दिनदीपमान भानकीप्रमान दरशात ना। गूंधि गुलगजरे गुलाबन सों गलकाय गलिन में गरमीकी गरद लखातना ३४ नदिनमें नारनमें नारँगी अनारन में नवल निवारनमें तौरबदलेगये। नन्दराम ग्रीयम गुमामें गरमी में गैल गहब गुलाबनसों अंगभस लेगये। ऊसर के अंगन में नीर नदी रंगनमें तरल तरं-गन में हरिनछलेगये। हेम गिरि मन्दर में हिमगिरि के कन्दर में अन्दर के अन्दरमें बन्दर चलेगये ३५ चौकमें चटक चांदनी में चारुसेज सारु नारन के ऊ-परसेवारन बिछाय दे। चन्दन की चहल चमेली के

अतर घोरि घने घन सारन चहुंघा छिरकायदे। कहै नन्दराम तैसे बोरिके सुगन्धनसों हौरे हौरे बेगि बेश बीजना डोलायदे। गहगहे गहब गुलाबन के गंजगुहि गजरा गरेगरू गुलाब गलकायदे ३६ जीवन को त्रास कर ज्वाल को प्रकाश कर भोरही ते आशकर आसमान छायो है। धमका धमक धूप सूखत तलाव कूप पौनको न गौन भौन आगि में तचायो है। तकि थकि रहे जकि सकल बिहालहाल ग्रीषम अचर चर खचर सतायोहै। मेरेजान काहूसूयभान जगलोचनको तीसरो त्रिलोचनको लोचन खुलायोहै ३७ जेये बिना जीरनसो जलकी जिकिरजीभ जरयोजात जगत जला-कनके जोरते। कूप सरसरिता सुखाय सिकता में भई धाई धूर धौरन धराधरके ओरते। बेणी कवि कहत अनात पचहत सब अगिनसों आतप प्रकाश चहुँओर ते। तावासों तपत धरामण्डल अखण्डल सो मार्त्तण्ड मण्डल दवासो होतभोरते ३८ धुधुरे दिगन्त भये बि-गत बसन्त आली ग्रीषम बिषमदिन काहूना सुहातहैं। तैसेही प्रचण्ड मार्त्तण्ड नवोखण्डतपैं बलित बवण्डर बहत चारौंबातहैं। सूखे से लगतद्रुम रूखेभूखे सलिल से भंजन भयावन महावन भुरातहैं। आवा सो जगत भयो तावासो तपति भूमि दावा भरे भूधर पजावा से सुवातहैं ३९ ग्रीषम में भीषमहै तपत सहसकर बापी तारे नारे नदी नद सूखि जातहैं। झंझा पौन झरपि झरपि झकझोरि झोरि धूरिधार धूसरे दिगन्तन

दिखातहैं। श्रीपति सुकवि कहै आली बनमाली बिन खाली जगमोंहिं कैसे बासर बिहातहैं। तावासो अजिर पग लावा सोतचतघर भयो गिरि आवा सो पजावासो सुवातहैं ४२ प्रबल प्रचण्डचण्ड करको किरणिदेखो बैहरउदण्ड नवखण्ड धुंमिलतिहै। औटिके कराही रतनाकरको तेल जैसे नैनकबि जल की लहरि उछलति है। ग्रीषम की कठिन कराल ज्वाल जागी यह काल ब्याल मुखहू की देह पघिलति है। लूका भयो आसमान भूधर भभूकाभयो भभकि भभकि भूमि दावा उगिलतिहै ४३ उछरि उछरि भेकी झपटैं उरगपैं उरग पगकेकिनके लपटैं लहकिहै। केकिनकी सूरति जिये कीना कछूहै भये एकी करि केहरिन बोलत बहकि है। कहै कवि ब्रह्मवारि हेरत हरिणफिरैं बैहर बहति बड़े जोर सों जहकि है। तरणि के तावन तवासी भई भूमिरही दशहू दिशान में दवासी यों दहकि है ४४ सेनापति तपनि तपत उतपति तैसो छायो रतिपति ताते बिरहबरतुहै। लूवन की लपटैं ते चहूँ ओर भपटैं यों ओढ़े सलिलपटैं नचैन उपजतुहै। गगन गरद धुंधि दशोंदिशा रही रूँधि मानो नभ भार की भसम बरसतुहै। बरणिबताई क्षिति ब्योमकी तताई जेठआयो आतताई पुटपाक सों करतु है ४५ सेनापति उवैं दिनकरके चलतलुवैं नदनदी कुवैंकोपि डारत सुखायके। चलत पवन मुरझात उपबनवन लागयोहै तवन डाख्यो भूतलौ तचायकै। भीषम तपत ऋतु ग्रीषम सकुचि ताते

शीतहै कछूक तहखाननमें जायके । मानो शीतकाल शीतलताके जमाइबेको राख्योहै बिरंचिबीज धरामें धरायके ४६ चण्डकर भारन भकोरत सरोष पौन तोरत तमालगन सदन्दन भारोसो । धमकैधरणिगिरि तमकै प्रतापजाको देखत सजेजरेज जगत निहारो सो । तरुक्षीणछाया सरसोखत समुद्रवन करनबिचारदेखो आतप अगारोसो । छावत गगनधूरि धावत धधात आवै चापचढ्यो ग्रीषम गयंद मतवारो सो ४७ ओब-रिन दोबरिन तहखाने खसखाने आपने बचायबे को फिरैं मैं तरणिके । रघुनाथ की दोहाई पैयत न कहूं कल लागतहो बिहवल होतिहैं अरसिके । आजके पवनकी व्यवस्था कौनकौन कहौं आवतहै तरणिकि-रणिको गरसिकै । मलयके सांपनके बिषको करषि कैकि दावामें भरसिकै कि बाड़व परसिकै ४८ वृष को तरणितेज सहसौ किरणकरि ज्वालनके जाल बिकराल बरसतुहै । तचति धरनि जग-जरत भरनि सीरी छांहको पकरि पंथी पंछी बिरमतुहै । सेनापति नेक दुपहरीके ढरतहोत धमका बिषम योंनपात खर-कतुहै । मेरेजान पौनोसीरी ठौरको पकरिकोनोघरी एकु बैठि कहूं घामै बितवतुहै ४९ घोरि घनसारन ते सखिन कचूरचूर लीपे तहखाने सुख दीबेको दुदण्ड की । तामें खसखाने बने उज्जरेबिताने सुरभौनकी समानै जे निदानै ठानै ठण्डकी । बहत गुलाब की सुगन्ध के समीरसने परत फुईहैं जलयन्त्रनके तराडकी । बिप्राद

उसीरनके फोर परदान प्यारे तऊ आनि बेधत मरीचैं मारतगडकी ५० सीनाबीच ह्वैकर पसीना की बहत धार जीनाभयो जलुमन नैनहूंसों घरसी। सेवक भनत पौन पानीते कढ़ति आगि दागिजैये परसिन होत कबौं नरसी॥ खसखाने रसखाने गये ह्वै अतसखाने कसखाने बैठिकहौ पूजै होसहरसी। ईयमसी ह्वैरही नहीयसपरतभूरि भीयमभईहैगाढ़ ग्रीयमकीगरमी ५१ सीरे तहखाने तामेंखासे खसखाने सींचे अतर गुलाब की बयार दपटतिहै। भूधर सुधारे हौज छूटत फुहारे भारे बारे तापदाननमें धूपदपटतिहै। ऐसेमें गवन कहो कैसेके कीजियत सुधासी तरंगप्यारी अङ्ग लपटतिहै। चंदनकिवार घनसारके पगारबीच तऊ आनि ग्रीयम की झार झपटति है ५२ अम्बर अतरतर चन्द्रकच हलतन चंदमुखी चन्दन महलमैन सालासे। खासेखस खाने तहखाने तरताने तने ऊजरे बितानेछुये लागतहैं पालासे॥ दत्तकहै ग्रीयम गरमकी भरमकौन जिनके गुलाब आबहौज भरे तालासे। झाला से झरत झर झांपनमी बाराबांधे धाराबांधि छूटत फुहारा मेघ मालासे ५३ चादर चहूंघा गिरिझारादर मचाइ गिरैं नहर निरादर लौं जातिकम्पसानेमें। केतेजलयंत्रभीत यंत्रसे सलैके चलैं बीजन स्वतंत्रके तुषार मंत्रमाने में। फरद फुहारनते ग्रीयम गरद कीन्हो सेवक त्यों गरद सुबासदै खजानेमें। संग नवलाके मनमोहन अनंगराचे माचे रसरंगकी तरंग खसखानेमें ५४ दर्गौदिशि तची

अवलोकियत ग्रीषम में जल थल बिकल अवनि सब थहरी । अमृत के पुञ्ज दोऊ औचक मिले हैं कुञ्ज द्रुम बेली नीकी तकि छांह छवि गहरी । राधे हरि भूलि पलल्लुव छाक सखीमुख रसके समुद्र बढ़ी अनुरागलहरी । चन्द्रमासों लाग्यो भानु चांदनीसी लागी धूप शारदकी रातिभई जठकी दुपहरी ५५ क्षिति जल अम्बर दशोंदिशा तचीईजात नेकु न सुहात सब बन बेलि झरसी । सीरीहू उसीरन की टाटी आवटीही जात साटीकर नाटीहून नेक जात परसी । ता छिनही आये कुंजभौनमें कहूंते श्याम चाँदनीसी लागी घाम सूरज लग्यो शसी । दीरघ निदाघ को दिवस घटिका सी लाग्यो होत न व्यतीत जानि छनदा छनकसी ५६ चन्दनमहलमध्य चन्द्रक चहलचारु चाँदनीसी चिकें चन्द चाँदनी सुहाईहैं । तर अतरन बीर बिजन बयार नीर नहर बिमलबारि चौगृद चलाईहै । रजतफुहारन की परत फुहीहै तहाँ परमानद गुलाव की गिलंबिछाईहै । ग्रीषम गरमधर्म पावै क्यों प्रवेश तहाँ जहाँ महराज व्रजराजकी अवाईहै ५७ कमल बिछाये बर बिमल बितानछाये छबिभरे छज्जे दरवज्जे महराबके । घने घनसारके सवाँरे सखिहौज तामें छूटत फुहारेभारे केसरिके आबके । सौंधी सेज सुमन शिँगार अंगाराग होत राग रंग भारे सुरसरसहित्तावके । चन्दनकी खौर बेंदी बन्दन बनाय बैठे राधिका गोबिन्द आज मन्दिर गुलाबके ५८ खासे खासे खुले खसखाने खुशबोई

दार आसपास छुटतफुहारे बड़ेतावके। गिरिधारी फ-रश्न सवाँरी तहाँ फूलन की परेदर परदा दरीचिनमें दावके। चन्दन भिगोये सुखसोये श्यामाश्याम तामें ग्रीयममें ऊयम हेरानी आबतावके। गहबगलफगुल-गुली गुल सुईचारु गिलिम गलीचेतर अतर गुलावके ५९ भरियत गहरे गुलाब हद हौदन सुधारियत रजत फुहारे तदबीरके। ढरियत ढारन सुढारन नहर नीर दरियत घनसार शरद गँभीरके। करियत तरअतरन सों बिछौना कबि शोभजू उघारियत बातायन नीरके। चन्दन पलँग अरबिन्दनकी सेज पर सुन्दरी सिधारी आजु मन्दिर उसीरके ६० रावटी उसीर बिछी शीत-लपटीरबीर तीर तीर त्रिविध समीर झपटत जाति। चन्दन कपूर लिपी दहरें सुगन्ध भूमि फहरें दुहू के पटचित चपटत जाति। छूटत गुलाबभरे ललित फुहारे भारे परत फुहीकेही के रंग रपटत जाति। सरकिसु शोचि सकुचाय यशवन्त अंक ससकि सलोनी शशि मुखी लपटत जाति ६१ हौद बीच पलिका पै राजत रसिक दोऊ चहूं ओर छूटें जलयंत्र त्यों महमहात। लागिकै गुलाबनीर फिरत फुहार अंग रंग बैंढिबैनमैन नैननि डहडहात। सगबगे बारछूटि रहीं लटैं आनन पै रगमगे रागतान बीनामें गहगहात। रीझैं भीजैं लप-टात जातगात बातलगि प्रेमके तमाल नेह बेली ज्यों लहलहात ६२ शीतल महल महा शीतलपटीर पंक शीतलकै लीप्यो भीति क्षिति कांति दहरें। शीतल

सलिलभरे शीतल बिमलकुंड शीतल अमल जल यंत्र धारा छहरैं। शीतल बिछौननिपै शीतल बिछाइ सेज शीतल दुकूलपैन्हि पौढ़ेहैं दुपहरैं। देवदोऊ शीतल अलिंगनन देतलेत शीतल सुगन्धमन्द मारुतकी लहरैं ६३ दोऊ अनुरागभरे आये रंग भौनभाग मघवाशचीको लखि लागत सहलहै। बैठे एक आसनपै एकै संग एकै रंग चल्योना परत अंग कोमल कहलहै। एकनलै अतर लगायो देव दुहुँन के छिरकि गुलाब कीन्हो बिजन बहलहै। लैंकै करबीनै परबीनै अलियां अलापैं मञ्जु सुर पुञ्जन ते गुञ्जत महल है ६४ माधोधाम तची भूमि तैसी कामधाम धूम प्यारे बन वारी जू न जैये बनवारी मैं। उबटि कपूरचारु चरचि कै चन्दनसों छूटत फुहारे सुख सेजन सवाँरीमैं। भूधर सुकबि कहूं रबिसों न हेरयो लाल प्यारी अंग संग रंगरीझिरीझि वारीमैं। बसो दुपहर रतिखाने बाला खाने बीच भोर होत भौन में अथोत फूलवारी मैं ६५ आईचलिचन्दमुखी चांदनी महलशोभ चमकत बादला बसन बितरनसों। चांदीकी फुहारनते फैलत फुही हैं फूलसेजपर दंपति छकतरस रनसों। बाजें बीनबाद कलहंसन अबादकिये नूपुरनि नादवे धरन उतरनसों। सरभये सौतिनके सतरमनोरथ री तरभये पंथके गुलाब अतरन सों ६६ फहरैं फुहारे नीर नहरैं नदीसी बहैं छहरैं छबिनछाम छीटनकी छाटी हैं। कहैं पदमाकर ज्यों जेठकी जलाकैं जहांपावैं क्यों प्रवेश बेश बेलिन

की बाटीहैं। बारहूदरीन बीच चारहू तरफ़तैसी बरफ़ बिछाई तापै शीतल सुपाटीहैं। गज़क अँगूरकी अँगूर से ऊँचे हैं कुच आसव अँगूर को अँगूरही की टाटी हैं ६७ तपै इत जेठ जगजात है जरत जाशों ताप की तरनि मानो भरनि करतहै। इतही असाढ़ उठे नूतन सघन घनशीतल समीर हिय हीतल भरतहै। आधेअंग ज्वालन के जाल बिकराल आधे सुखद समोद हिय धीरज धरतहै। सेनापति ग्रीषम तपत ऋतु भीषम दै मानो बड़वानलसों बारिधि बरतहै ६८ चलैलूक पवन लुकारी जनुसम्बतके मानो भालुजुरे देहसुख जुरे बाघ के। मारतंड तेजसे बिकल भये जलथल रावटीउसीर राजा जाने निशि माघके। पीयेपीये करत जहानरहे रातौदिन सरिता तलाव आव पीपीपोषे दाघके। भनत दिवाकर अनलते अधिक आंच कांच चुपेकांकरी दुपहरी निदाघके ६९ ॥ सवैया ॥ ऋतुग्रीषमकी प्रति बासरकेशव खेलतहैं यमुना जलमें। इत गोपसुता वहि पार गोपाल बिराजत गोपिनके गलमें। अतिबूड़ति है गति मीनन की मिलिजाय उठैं अपने थलमें। यहि भांति मनोरथ पूरिदोऊ जनदूरिरहैं छबिसोंछलमें ७० कबित्त ॥ चलति उश्वास की झकोरघोर चहूँओर नहींहै समीर जोर सुधाकहैं लोगहै। शोचनकी लहरैं न ठहरैं सकोचन ते रबिकरहोय नहीं प्रयामहै धुसोगहै। मृगनभ्रमतमेरेमनके मनोरथये फेरेनहिं फिरैंलगी प्रीति तयाकोगहै। धीरधरैंबीर कैसे तपत उसीर भौननाहीं

यह ग्रीषमरी भीषम बियोग है ७१ पतित दुजन को है देति सुमनै सुखाय लगै अति काननमें बात तापमें बली। मित्र वृषकोहै जहांभारी दुखकारी बनो बोलै दुगरातेबिन काल वृथाहोछली। जीवन जलावति है लावतिहै आगि मनो दीनद्याल सारस न मिलै जलकी थली। देत नाहिं बसन सुबसन उतारबिन किधौं यह ग्रीषमकी घोरखल मण्डली ७२॥

पावसऋतुके कबित्त व सवैया ३॥

कबित्त॥ कंटकित होत गात बिपिन समाज देखे हरीहरी भूमिहेरि हियो लरजतुहै। निपट चवाईभाई बन्धु जे बसत गांउ दांउ परे जानिकै न कोऊ बरजतु है। एते पै करसाध्वनि परत मयूरनकी चातकपुकारि तेहताप सरजतुहै। अरजो न मानी तू नगार जो चलति बेर एरे घनबैरी अब काहे गरजतुहै १॥ सवैया॥ बरसैं बनकुंजन पुंजलतासिकमंजु मयूरनको सरसैं। मधुघोर किशोरकरैं घनये चपलाचलचारु कला दरसैं। अलि हो बलतू चल बेगि इहा उतते बिनप्राण पियातरसैं। उमड़ै दुमड़ै घुमड़ै घन आज मिही बुंदियान मड़ो बरसैं २॥ कबित्त॥ पौनहहराई बनबेली थहराई लहराई सौरभ कन्द बनन की मानते। झिल्ली झुननाई पिक चातक चिच्याई उठै बिज्जु छहराई छाई कठिन कृपान ते। कहैं परमेश चमकत जुगुनू नचाय मेरे मन आई ऐसी उक्ति अनुमानते। बिरही दुखारे तिन पर क्रूरदई मारेमानो मेघबरसत अँगारे आसमानते ३ उठत

पहारे घनकारे सारे बद्दलके कज्जलते कारे धुधकारे देत दामिनी। छछत छरारे ते करारे बुंद बरसतभारे अन्धकारे अटा लागत भयावनी। मोरवा कुहूंके जोर शोर पिककूकें बंदि मराडुक धधूकें सोचुहूंके कोकिलाघनी। कन्तबिन कामिनी बिरह सरसावनी सो लागोडर पावनीय भादौंकेरी यामिनी ४ नीलपटतनुपै घटानसी घुमाई राखौंदन्तकी चमकसों छटासी बिचरतिहैं। हीरनकी किरनै लगाइ राखै जुगुनूसी कोकिला पपीहा पिकबानी सों ढरतिहैं। कीच अंशुवानकी मचाऊं कवि देवकहै प्रीतम बिदेशहैं सिधारिबो हरतिहैं। इन्द्र कैसों धनुसाजि बेसरि कसति आजु रहुरे बसन्त तोहिं पावस करतिहैं ५ घनको घमंक औ बनक बक पांतिन की बीजुरीचमककर बालसी देखातरी। ललित लतान लखियतुहैं नदान और कहैं परमेश त्योंं बहत बेस बातरी। मोरन को शोर चहूंओर होत ठौर ठौर दादुरकी दूँदि घोर करै तनु घातरी। सुख सरसावत लगेरी लोग गावन को बिना मनभावन नसावन सोहातरी ६ छोटे छोटे कैसे तृण अंकुरित भूमिभये जहां जहां फैली इन्द्रबधू बसुधानमें। लहकि लहकि सीरी डोलति बयारि और बोलत मयूर माते सब्रनि लतानमें। घुरवा धुकारैं पिक दादुर पुकारैं बक बांधिके कतारैं उड़ैंकारे बदरानमें। अंशभुज डारे खरे सरयू किनारे प्रेम सखीवारि डारे देखि पावसबितानमें ७॥ सवैया ॥ सावन कोऊ पठाऊं

उतै उनतौ इहि औसरमें कहे आवन । गावन एरीलगे मुरवा धुरवा नभमंडलमें लगेधावन । छावन योगीलगे शिषलाल सुभोगीलगेहैं दशा दरशावन । तावनलागो वियोगिनको तनु सावन बीरलगे बरसावन ८ ॥कवित्त॥ पौनके झकोरन कदम्ब झहरान लागे तुंग फहरान लागे मेघ मराडलीनके । भनत कवींद्र धरा सारनभरंन लागे कोश होनलागे बिकसित कन्दलीन के । उरज निवासिनकोत्रास उपजनलागे सम्पुट खुलनलागे कुटज कलीनके । माचो बिरहीनके अहीन स्वर झिल्लिनके दीन भये बदन मलीन बिरहीन के ९ बियत बिलोकतही मुनि मन डोलि उठे बोलि उठे बिरही बिनोद भरे बनवन । अकल बिकल ह्वै बिकानेरे पथिक जन ऊर्ध्वमुख चातक अधोमुख मंडलगन । बेनीकबि कहत सहीके महा भाग भये सुखद संयोगिनि बियोगिनिके तापतन । कंजपुंज गंजन सुखी दलके रंजनसे आये मान भंजनपै अंजनबरण घन १० घुमड़ि घुमड़ि आये बादर उमड़िधाये सांवरे बिदेशछाये औसर करारेमें। दादुर पपीहा मोर शोर चहुंओरकरैं मारत मरोर उठि कामज्वार जारे में । घूम जलधारैं करैं उमंगि सलिल सरैं गाजकी गजौन सरैं बैस मतवारे में । झूकैं झुकि जातीचढ़ी झूलिझूलि गातीदेखि फाटैबीर छाती हा कुठीर भये भारे में ११ ग्रीषमते तचिबचि पावस मरू के पाई तामें फूके जुगुनू झबूकैं लागैं पौनकी । हूकैं उठैंहियमें कूकै लखैं बून्दनकी झिल्लिहू नमकैं ये

बिसासी बैरी भौनकी। चपला चहूं के त्यों त्यों तनमें भभूके उठैं ऊकैंमारे मुखन कहोंमैं कौन कौन की। दादुरकी हूकैं घायकरत अचूकैं उर कोकिलकीकूकैं तापै बूकैंदेती नौनकी १२॥ सवैया॥ चहुंघाते घरीघरी घेरिघना घनकी घटाघोर घनी घहरैं। छिनही छिन छीनन को बरछी छितिलों छन छाया छटा छहरैं। चकवा चकई बक चातक चीरिनकी चिचियानिचहू चहरैं। बिलखाय बियोगिनि बेदन से बिजया नँद बैठरहे बहरैं १३ झूमिरहे घन घूमिघने बलि बोरत भमिमनो चहुँघा घिरि। है अफसोसन रोसकरौं बिन हौस लतारहि रूखनसों भिरि। बेनी पपीहन मोरन-हूं हहरानन ढूँढि करैं बहुते फिरि। ज्यों डरपै तड़पै बिजुरी परैकाहू बियोगिनि पैन कहूं गिरि१४॥ कबित॥ कूकैलगीं कोइलैं कदम्बनपै बैठिफेरि धोये धोयेपात हिलिहिलि सरसैलगे। बोलैलगे दादुर मयूरलगेनाचै फेरिदेखिकै सँयोगीजन हियहरसैलगे। हरीभई भूमि सीरी पवन चलनलागी लखि हरिचन्द फेरि प्राण तरसैलगे। फेरि झूमिझूमि बरषाकी ऋतु आई घेरि बादर निगोरे झुकिझुकि बरसैलगे १५ आयोऋतु पावसलों योवन चढ़ाई करि से सबको फन्द बन्द छोरन चहतहै। ग्रीषम समान मिट्यो ज्ञात गुरुजन भीतपवन सुछन्दता झकोरन चहतहै। कामकोघनेरो घन बरसि सनेहबुन्द तनमन प्राण सबै बोरन चहतहै। बयस नदी में लाल प्रेम को प्रवाह बाढ्यो लोकलाज

सीमाहाय तोरन चहत है १६ कूकैलगीं कोकिलैं कदम्बनपै रातोदिन मोरपिक शोरहू सुनात चहुं पास है । मन्दमन्द गर्जत घनेरी घटा घूमिघूमि बहतसमीर धीर संयुत सुबासहै । जितातित नारीनर गावैं सुखपावैं अति झूलत हिंडोरेलाल बाढ़त हुलासहै । हिये झर-सावनको काम सरसावनको बुन्द बरसावनको सावन सुमासहै १७ कैधौंवाहि देशजहां प्रीतमपियारे बसै घोरे घटा नहिं घमि घूमि घहरावैं है । कैधौं चमकत नाहिंचपला चहूं घातहां कैधौं नासुरेश कबौं बुन्दझारि लावैंहै । कैधौंकाम कुटिल नब्यापत करेजेकैधौंकोऊ नाहिं मेघश्री मलारराग गावैंहै । कैधौंलाल पावसकी रातमैं पपीहा पापी बारबार पीपीकर कूकनासुनावैं है १८ बेलिन सों लपटे ललित लहकारे भये बलित तमालनके देखेपरैं दरखत । चातक शिखंडी मंदमेडुक रहेहैं नादि झींगुर झनक करैं जोर शोर हरखत । झंझापौन झूकैंऔ कुहूकैतैसी कोकिलाकी अजबेस बिरह बधूकेप्रान करखत । पारावार धारकी धरामें जलधारा भई धारन सो धाराधर बारिधारा बरखत १९ मल्लिकान मंजुल मलिन्द मतवारे भये मन्दमन्द मारुत मुहीम मनसाकीहै । कहै पदमाकरते निनद नदीनंनित्त नगर नवेलिनकी नजरि निसाकीहै । दौरत दरेरा देत दादुरसे द्वन्दैं देह दामिनी दमंकति दिशान में दिसाकी है । बद्दलनि बुन्दनि बिलोकि बकुलान बाग बंगलनि बेलिन बहार बरसाकी है २० दामिनी

दमंकनते झिल्लीकी झमंकनते दादुर असंकनते उमग उईपरै। बादरते बनते बहार बरहीते वेश बेलिन ते फूलन ते फहरि फुईपरै। जलकी जलूसजेब योवन जमाजमतें जुगुनू जमक हरियारी ते हुईपरै। पोहमी पहारनते पारावार पारनते पौनते नवीन ऋतु पावस चुईपरै२१ धुंधुरित धुर धुरवानकी सुछाई नभ जलधर धारैं धरा परसन लागीरी। द्विजदेव हरीभरी ललित कछारैंत्यों कदंबनकी डारैं रस बरसन लागीरी। कालिहीते देखिवन वेलिनकी बनक नवेलिनकी मति अति अरसन लागीरी। वेगि लिखु पाती या सँघाती मनमोहन को पावस अवाती ब्रजदरशन लागीरी २२ घटाघन छतरीपै बगपांति झालरहैं इन्द्र धनुबांसरंग बिबिध मढ्योफिरै। दामिनी दमंक सोई झगाकीझमंकमाने बेलिहरी भूमि वृक्षतकिया कढ्यो फिरै। बीरकहै शीतल समीरही कहार किये धुरवा खवास रासबिधिसों बढ्योफिरै। प्यारी पहिंचानपति पतनी की पौरिपौरि पंचबान पावसकी पालकी चढ्योफिरै २३ उमड़ि उमड़ि घन घुमरत आये घने घेरि देत निदरि नगारनकी धूमको। कहत किशोर चारो ओरनते जोरावरी जोरे देत जुरबिजुरीन वारी धूमको। झाझ झंझा पौन तैसी झपटि झकोरे देत झोरे देत झालरैं तमालनकी झूमको। जलजको जोरेदेत जलद को ढोरेदेत जलधिको फोरेदेत बोरेदेत भूमि को २४ झरपि झरपि झूमि झूमि झरैं जलधर तरपि तरपि

उठैं तरिता घरी घरी। तैसी अभिराम वाम काम सों लपटिघन चिन्तामणि हेरु बेलि बन की हरी हरी। जकिजकि पापी पिक बकि बकि जोरि जोरि तकि तकि प्यारी कारी सूरति डरी डरी। दौरति गिरति उझकति झुकि झुकि जाति चौंकति चकति चक चौंधति खरीखरी २५ झंझा झकझोरनसों घूकें चहूं ओरनसों पावस झकोरनसों असोसो छन्योपरै। तरुनाइ तोरनसों हियकी हलोरनसों व्यथा सिंधु बोरन सोंतनहूँहन्योपरै। बोलत मरोरनसों दादुरकी शोरनसों हित मोतीरामकबि कैसेकै भन्योपरै। बादरकी कोरनसों जलकी घँघोरनसों मोरनके शोरनसोंमैनउफन्यो परै २६ अमित शिखंडिन की मगडी धुनि मगडल में झींगुर झकोर झिल्ली झरप झरापैं री। चञ्चल ह्वै चपला चमंकै चगड चारोंओर चातक चुनौटीपीव पीवहि अलापैंरी। कहै नन्दलाल गाढ़ अगम असाढ़ आयो दादुर दरेरनकी दरत दरापैंरी। मरी उर कापैं प्राननाथ कुबजा पैं अबकौनसहै दापैं धुरवान की धरापैंरी २७ कैसे धरौं धीर बीर पावस प्रबल आयो छाई हरि आई छितितम नगपांतीहैं। कोकिलकलापै केकी चातक चकोर झिल्ली दादुरहूकीबा करैं शोर दिनरातीहैं। घासीराम रातीराती ललन सुहातीमिलि इन्द्रकीबधूटी चहूँ ओर दरसातीहैं। नटके बरासी छटा बिजुरी चमक चारु तड़पि अटा सों घटा घसि घसि जातीहैं २८ लागत असाढ़ दल साजि चढ़यो मेरे पर

घेरेलेत मोहिं बोलि टेरैं जलसरजे। झिल्लिन के झुंड बकझुण्डते सुभट संग बोलत नकीब केकी काके रहैं बरजे। चंचला निशान आसमान फहरानलागे भूधर सुकवि कहै येही पंचशरजे। आधे आधे बैन कहि राधेमें रह्योनचैन मैनपादशाहके नगारे आनिगरजे २९ छायछाय खसखाने चन्दन लिपायगेह बन्दन बँधाय अरविन्दनकी झापैं तो। ग्रीषम की तीषन तपन तन ओढ़ी अब छोड़ी आसडोंडीदै कलापी जो अलापैं तो। बेणी कविकहै आयो आयोरी असाढ़ अब जीबे की न आस जिये दूनीह्वै हैं तापैं तो। अतनतरापैं मनकापैं बारबार बीर आय जैहैं बदराबराय जैहैं कापैं तो ३० घनघहरान लागे अंगसहरानलागे केकी कहरानलागे बनके बिलासीजे। बोलिबोलि दादुर निरादरसों आठों याम ग्रीषमको देनलागे बिरह बिदासीजे। ठाकुर कहत देखो पावस प्रबलआयो उड़त दिखानलागे बकुला उदासीजे। दाबेसे दबेसे चहुँ ओरन छपेसे बीर बसिबसि रहैलागे बदराबिसासीजे ३१ आली ऋतुग्रीषमबितायें बिनपीवबिन कठिन कठिनकरि बचीहैां मरीमरी। अब तो इलाजको रह्योन कछुकाज लखि उठी ये घटान घय- या उमड़ी खरीखरी। अजहू नआयेहरी झरी जलभरी भूमि चहूंओर देखो बनीहोरही हरी हरी। छूटनलगेरी बीर धुरवा निहारप्रान लूटन लगेरी बोल मोरवा घरी घरी ३२ जलभरे झूमैं मनोभूमैं परसत आय दशहूं दिशान घूमैं दामिनी लये लये। धूरि धार धूमरे

से घूमधे धुवारेकारे धुरवानधारे धावैं कविसों कथे कथे । श्रीपति सुकवि कहै घेरि घेरि घहराहिं तकत अतन तन तापते तयेतये । लालबिन कैसे लाज चादर रहैगी मेरिहिं कादर करत आय बादर नयेनये ३३ झंझापौन झूकेलगें अङ्ग सबहूके त्योहीं उठत भभूके पंचबानजूके बानकी । दशोदिशि हूके मेघदोरहेतहूके त्योहीं चातिक उलूके भनै देवन अचानकी । झिल्ली गनमूके चुपहोत जोमहूके त्योहीं जलकी कनूकैंप्रान प्यासीहोत प्रानकी । गयेश्यामजूके उपजावैं हियेहूकै सखी धुरवाकी धूकैं टूजेकूकैं मोरवानकी ३४ कारे जलधर चहुंघा ते झूकरत आवैं दामिनी सोहावै सो जनावै दुख गाढ़के । झींगुर पपीहा भेक शुक पिक मोर बोलैं डोलत समीर सो करत आढ़आढ़के । कहै कविरामपीरेअंकुरमहोतेकढे बढ़ीपीर बनिताके देखे जलबाढ़के । कामकेउमाहक बिरहीजनदाहक ये आये प्राणगाहक बलाहक असाढ़ के ३५ बरषत मेह नेह सरसत अंग अंगझरसत देह जैसे जरत जवासोहै । कहै पदमाकर कालिन्दीके कदम्बनिपै मधुपन कीन्होआय महत मवासोहै। ऊधोयह ऊधम जनायदीजो मोहनसों ब्रजबोहुवास भयो आगिन अवासोहै । पातकी पपीहा जलपानको न प्यासोकाहू दर्थियत बियोगिनके प्राणन को प्यासोहै ३६ श्यामघटा नाहीं येता धूमकी कटाहैं काई बीजुरी कहांहैयेता झाकैंउठैं धुरमैं । गरज कहां है घोर फाटैं ऐसी थंबनकी जुगुनू कहांहै येता चिनों

रहैं सुरमैं। मेघबुंद नाहीं ये बुझावत फिरतदेव तिनहीं
के छींट देखि आवत अतुर मैं । लालबिन हावाहल
अवकीवधावैकौनपरीआगि लागीहैपुरंदरकेपुरमैं ३७
दादुर नहोयँ दलआये मैनभूपजूकेबुंदिया न होयँ पंच
बानभरलाईहैं । दादुर न होयँये नकीबबोलैं चारोंओर
सुरवा न होयँहाँक सूरनसुनाईहैं । बगुला न होयँ श्वेत
ध्वजा भगवन्तजूके चपला न होयँ समशेरैं चमकाईहैं ।
बालम बिदेश याते बिरहिनि जारिबेको जुगुनू न होयँ
काम यामकी जगाई हैं ३८ अंकुर कुसुम इन्द्रवधूपन
चहुँ ओर करिकै भरोसतें राखे भूमिकै को पट है । घन
घनश्याम घटाछटा घिर घेरत है अवली विभूति भूति
पीवताके लहै है । इहर अवाजनकी जागि बसिये जनाको
मरिगो तलावबड़ो खप्पर अघट है । चेतके जियो लिये
को काम निशिदिन दाद्यो सावनहु योगी यों वियोगी
सरयत है ३९ राजै रसमैरी तैसीबरषा समैरी चढ़ी [illegible]
चला नचैरी चकचौंधा कौंधा बारैंरी । प्रतिकूल हरि
हिये परत फुहारैं कछुकोरैं कछु धारैं जलधर जलधारैं
री । भनत कविन्द्र कुञ्जभौन पौन सौरभ सो कौन को
कँपायके न परहथ पारैंरी । कामकेतुकासे फूल डोलि
डोलिडारैं मनओरै कियेडारैं येकदम्बनकी डारैंरी ४०
उमड़ि घुमड़ि घनघेरिकै घमण्ड कीन्हों चपला चमंक
चहुँओरलते भूमरे । निर्मल जाफीरापे बोलत अ
पीहा पापी कूकहैं कलापी ऐसेघोर सुनि घुमरे । कियोंके
वियोगी कैसे ऐसी समै महाकवि योगी तेबसे । जियके

फोरिफोरि तूमरे । देखि मेरी आली अवमैनके मतंग छूटे वायेआवैं धुरवा ये धौरेधौरे धूमरे ४१ उनयेते दिन लाये सखा अजहूं न आये उनयेते मेह भारी कागर पहारसे । कामके बशीकरन डारैं अवशीकरनतातें ते समीर जेहैं शीतल तुषारसे । सेनापति श्यामजूको बिरह छहरिरह्यो फूल प्रतिकूल तनडारत प्रजारसे । मोर हरषनलगे घनबरषनलगे बिनुबरषन लगे बरष हजार से ४२ दूरज दुराई सेनापति सुखदाई ऋतु पावस की आई नहिंपाई प्रेमपतियाँ । धीर जलधरकी यों सुनि धुनिधरकी सोरकी सोहागिनकी छोहभरी छतियाँ । आई सुधि बरकी हियेमें आनिकरकी कही जो प्राण प्यारे वह प्रेमभरी बतियाँ । बीति औधि आवन की लाल मनभावनकी डगभई बावनकी सावनकी रतियाँ ४३ चित घनश्याम धाम लागत निकाम वाम आठौं याम दहत अतनतन छतियाँ । केकी पिक कूकैं हूकैं उठें ये अचूकैं अंग लूकैं देतदादुर बिरहआग तातियाँ । पतिया न आई बीर छतिया जरन लागी बतियाँ सुहाति नाहीं भूली गतिमतियाँ । बीतीऔधिआवनकी लाल मनभावनकी डगभई बावनकी सावनकी रतियाँ ४४ शारदशशीते अधशशी ह्वै बचीहैं कवि चिन्तामणि तिमि हिमि शिशिर झमक ते । मारत मखके बची बधिक बसन्तहू ते पावक प्रजार बाँचा ग्रीषम तमकते । आयो पापी पावस ये प्रान अकुलान लागे भागेरी असान घोर घनकी धमकते । ताप ते तचौंगी

ओपै अमिय अँचौंगे आली श्रवन बचौंगी चपलान की चमकते ४५ गरजि घुमंडि लै सकल महिमण्डलै तहण्डविरहीनको उमण्डिकरि ऐंठैगो। दादुरपपीहा बोह दारुन दिखाईदेत मोरन को शोर तन तोर करि पैठैगो। चपलाकृपानबुन्द बानसे प्रवीन वेणी शीतल समीर प्रान अधिक अमैठैगो। जारीहैं बसन्तकौल-धारी मारी ग्रीषम की पावस कलंक तेरे शीश चढ़ि बैठैगो ४६ दामिनी दमक सुर चाप की चमक श्याम-घटाकी घमक अतिघोर घनघोरते। कोकिलाकलापी कल कूजत हैं जितजित शीकर ते शीतल समीर की भकोरते। सेनापति आवन कह्यो है मनभावन सु-लाग्यो तरसावन विरह जुर जोरते। आयो सखि सावन मदन सरसावन सुलाग्यो बरसावन सलिल चहुं ओरते ४७ कढ़ी दिशि दक्षिणते घोर घन घटा चढ़ी बढ़ी विरहीको दुख देनको न कमहै। ठाकुर भरोखे हू तनक ताकोतीय कह्यो तूरी ताकि आलीया उतम रंगतमहै। कह्यो वाहि मेघसों न मानै कहै जानै तन मरजत आवै या सुआयो येबाहमहै। हैनविज्जुहोत किरवारी रवड चमचम जोवआवै आवत जमात जोरे यमहै ४८ आई ऋतुपावस पपीहा बोलैं दादुर ये छ-तियाँ दरत तापैं विरह मदीकरैं। दौलत कहत हाल सुन्दरसरसबाल लालमोसा भयरा बिशालन रदीकरैं। चहुँ ओर चमकत चपलन चौंवचारु देखिदेखि मृग-नैनी बैन नदीकरैं। विरहिनि तियनके जियनके गा-

हक ये नाहविन नाहक बलाहक बढ़ोकरैं ४९ आये से अमल झलाझलऊ के टापे सेवे विधि कारीगर ने बिचित्र बिसतरेहैं। रंगत गहरेलाल लहरललामलोने छबिकी उमंगन सुहाये जल भरेहैं। ठाकुर कहत पूरे पानिपके मेरीओर सुखमा भरेहैं तातेउपमा न करेहैं। पावस फकीरकेके मदन अमीर के ये बासन चिनीके नोके ठौरठौर धरे हैं ५० लागयो मास सावन बिदेशी ठाँव ठाँवनसों आवनलगे हैं कैधौं उन्हैं सुधरी नहीं। कैधौं वहिगावनमें जावन कहत कोऊ कैतो गुनगावन कीरीझ अगारी नहीं। भनतकविन्द्र मनभावन तिहारे हम पावनको सेवैं तकसीरहू परीनहीं। हतेतो हितावनपै तावनलगेहो देह दावनलगेहोकी बिदावन करी नहीं ५१ शीतल समीरउर तीर सों लगतअरी हरीहरी बेलिनपै पावक प्रजारिदे। दादुरनि दूर करि पिकन पकरिदैरी बागनके बाहिर मधुपमोर मारिदे। पावस में पियबिन बिपति बढ़ावैं येसु जीवन जिवैवे की उपाय उपचारिदे। दामिनी दबायदे तू बादर बिदाकरी बुन्दन बरजिकरि बगन बिडारिदे ५२ पावसप्रथम प्रिय आपनो अवधि सोतो आवतही आवैं तो बुलाव अति आदरन। नाहीं तो न होखहोन दैरी झीलझाबरन ग्रीषमहिँ भाषि खाली राखि खल खादरन। बीजुरी बरजिकहि मेघैं न गरजि इनप्राजमारे मोरमुख मोरही निरादरन। चोंच नोच चातकन कंठ रोंकि कोकिलन दूरि करि दादुर बिदाकरी बादरन ५३

आई ऋतुपावस न आये प्राण प्यारे याते मेघन बरज आली गरज सुनावैना। दादुरनि कहि बकि बकि जिन फोरैं कान पिकन हटकि भलि शब्द सुनावैना। बिरह व्यथामें मैंतो व्याकुल परी हौं देव जुगुनू चमकि चित चिनगी लगावैंना। चातक न गावैं मोर शोर ना मचावैं घन घुमड़ि न आवैं जौलौं लाल घर आवैंना ५४ गरज पुकारसे बियोगी तनछार भये बूँदें बिष बारि परैं महाबिषधारी के। धुरवा अनेक फन मण्डन को बिज्जुमणि चमकि चकितचित होत नरनारीके। बोरैं फेन झरैं बायु मंत्रसों सँचारकरैं देशनमें रोरिपरै सूरत डरारीके। भामिनि भँडारेविष बामीते निकारेकान्ह फिरैं घनकारे नागपावस खिलारी के ५५ घेरि घेरि घहरि घहरि घन आये घोर तापै महामारुत झकोरत झरपसो। सुनि सुनि कूकनि मयूरन की बोर में तो राख्यो निज प्रान यमराजहि अरपसो। भीतभरी भौन ते कढ़ौन कमलापति मैं तऊवेधे डारैं हियो तड़िता तरपसो। गावन मलारको सुहावन लगै न भयो भावन बिनारी मोहिं सावन सरपसो ५६ कारीघटा कामरूप कामको दमामो बाज्यो गाज्यो कवि ग्वाल देत दामिनि दरेरसी। लपकि झपकि आयो दादुर मचायो शोर हमैं तो बिरह सखि मदन दरेरसी। बालमबिदेश बसे चातकको जोरलसे ताहीसमै होत कछू औरै हरबेरसी। बूंदनको छन्दसुनि आँखैं मुँदिमुँदि जात आयो सखी सावन सँवारे शमसेरसी ५७ उमड़ि उमड़ि बकी

बद कूल बोरतहैं जोर जलधारनसों सूझत कहूंना है। परम प्रचण्ड पौन धावनि त्यों धुरवाकी झिल्लिन को शोर सुनेहोत कान सूना है। गिरिधरदास महाविऋजुको प्रकाशसोई लागो देह दुसह दवानल सों दूना है। सरो बाल जोई श्याम बिन सुखखोई यह पावस न होय प्रलैकाल को नमूना है ५८ आई ऋतुपावस बहत पुरवाई पौन काशीराम तैसी ये तड़ितछवि लपकन। झूमिआये बादर बिहंगबन बोलिउठे चहूंओर कुञ्जन अँध्यारी लागी झपकन। झिल्लीझनकार हहनात मोर शोरसुनि बिरहअगिनि जरि छातीलागीतपकन। हेरहार हरतन हारदेखों आठोंयाम पिया के बियोगमेो निशाहू लागी हपकन ५९ सावन की रैन मनभावन गोबिन्द बिन देत दुखभारन में झिल्लिन के शोरहैं। कालिदास प्यारी अँधियारीमें चपलाहोतउमड़िउमड़ि घनघहरतघोरहैं। सूने कुञ्ज मन्दिरमें सुंदरी बिसूरैबैठी दादुरयेदहकसी लेतचहुं ओरहैं। हियमेंबियोगिनके बिरह को हूकउठी कूकउठो कोइल कुहुक उठे मोरहैं ६० घूमिकै चहूंघा धायआवैं जलधाराधर तड़ित पताके बाँके नभमें पसारिगे। द्विजदेव कालिंदी समीपन के नीपनके पातपात योगिन जमातिनसें भरिगे। चातक चकोर मोर दादुर सुभट जोर निज निज दाँवदाँव ठाँवनमें अरिगे। बिनयकुराय अब कोऊकहा आयहाय पावसमहीपके चहूंघा घेरे परिगे ६१ कारे कारे घन ये दतारे से दबत आवैं बोलत नकीब कोकी

कोकिलाप्रमानकी। दामिनिकी दमकचमककिरवा-
ननकी आमनकी बरषा बिरहवृन्ददानकी। घासीराम
बाजत नगारे भारे मेघकैधौं कैधौं इन्द्रचापकीन्हो च-
ढ़जकसानकी। दावन पर्कारिप्यारी बूझैं मनभावन ते
सावनसमूह कैधौं आवन अमानकी ६२ साजेशोरबादर
समाजैंजोर चहूंओर बाजैंऋतुराजके बधाईकेतुरवा।
तेसीतनतीरसी बयारबहै सीरीसीरी मन्दमन्दबोलैं मद-
माते बनमुरवा। गवनकी तुम्हैंपरी आजु इहिसमैहरी
हरीहरी भूमिभई दूबके अँकुरवा। बूंदैंबरषावन पिया
के परसावन सनेहबरसावन ये सावनके धुरवा ६३ धु-
रवा कलिन्दीकूल इन्द्रचापबटमूल राजत अतूलअति
आनंदकी शालासी। गरजमृदङ्गभारी चातक अलाप-
चारी केकी ततकारी पिक देतहठतालासी। बड़ीबड़ी
बुन्दन बखेरि पुहुपांजलि को धीरी पौन उघटि सुघट
पाँतिआलासी। व्योम राजमण्डलमें नृत्यकरैं श्यामम-
घन आसपास दामिनी बिराजैं ब्रजबालासी ६४ भूमि
नाचै नर्तकसे मोर येरी चहूंओर चञ्चला अकाशदेव-
नारिसी नचतिहै। गायकसे गानकरैं चातक बिपिन
घन गन्धरब गावैंगीत आनँद रचतिहै। गिरिधरदास
देव फूलबरसावैं जल सुमनलुटावैं तरु बुद्धि योंं जचति
है। पावसको जनम भयोरी यासोंं सुखमा सोंं अवनि
अकाश में बधाईसी मचतिहै ६५ चंचला चमंकैं चहूं-
ओरनते चाहभरी चरजगईती फेरि चरजनलागींरी।
कहै पदुमाकर लवंगन की लोनी लता लरजि गईंती

फेरि लरजन लागींरी । कैसे धरौंधीर बीर त्रिविध स-
मीरें तन तरजि गईंती फेरि तरजन लागींरी । घुमडि
घमण्ड घटा घन की घनेरी अबै गरजि गईंती फेरि
गरजन लागींरी ६६ ॥ सवैया ॥ उमडे नभ ते क्षितिम-
ण्डल मेघ घमण्ड चहूं दिशि छाय रहे । कविचन्दन
चावसें चातकमोर हरेबन शोर मचायरहे । पियपा-
समें बिरही बनितानमें आवनहारते आयरहे । कोहि
कारणहाय बिहायहमें हरिजायबिदेशमें छायरहे ६७
छायकेप्रेम गयेजबते तबतेमैंबची करिकोटिउपायके ।
पायके पावसरी ऋतुसें अब कोबचिहै उदि कोकिल
गायके । गायके सो नँदलाल कहै चपला चमकै चहुँ
ओरसें आयके । आयके हाय मिले नहिं मोहन मेरी
अटापै घटारहीछायके ६८ कोरनलौंदृगदेतीहैं काजर
कारीघटा उमडी घनघोरन । घोरनते जो चली अलि
सुंदर नेकरहेती नहिं बागकेमोरन । मोरनकीगति नाचत
है नहिं मानतहै हटको बरजोरन । जोर न अञ्जन देउ
सखी अँगुरी कटिजैहैं कटाक्षकी कोरन ६९ ॥ कवित्त ॥
पावसप्रवेश वेश छाइरह्यो देश देश शेष ज्यों सरोष
श्वास पौन गहिबेपरी । दादुर दबावै तन घेरिघेरिआवै
घन कोकिनकी कूकै वनहूकै लहिबेपरी । जानेमा स-
याना जोहिमुखहू न आनी अब भूपतिभवानीदीन सोई
कहिबेपरी । आये नहीं लालबाल भईहै बिहाल हाय
चातक चवाइनकी चोटसहिबेपरी ७० ॥ सवैया ॥ तडपै
तडिता चहुँ ओरन ते क्षिति छाइ समीरन की लहरै ।

मदमाते महागिरि शृङ्गनपै गण मञ्जुमयूरनके कहरैं। तिनकी करणी बरणी न परै सो गरूर गुमानन सों गहरैं। घन ये नभमण्डलते छहरैं घहरैं कहुँ जाय कहूँ ठहरैं ७१ चपलाचटमोर किरीट लसै मघवा घन शोभ बढ़ावतहैं। मृदुगाजत आवत बीण बजावत मत्तमयूर नचावतहैं। उठिदेखु भटू भरि लोचन चातक चित्त की तापबुझावतहैं। घनश्यामघने घनवेश्वरे सो बनेबनते ब्रजआवतहैं ७२ ॥ कवित्त ॥ गर्जिलेघुमण्डिले सकलमहि मण्डले औ दण्ड बिरहीन को अदण्ड अब ऐंठैगो। पापीहू पपीहा पीउ दारुण देखाइ दुःख मोरन को शोर तन तोरि अंगपैठैगो। चपला कृपाण बुन्द बाण सो प्रवीण वेणी शीतल समीर तन अधिक उमैंठैगो। जारिहैं बसन्तको लेयारी मारी ग्रीषमको पावसक-लंक शीश तेरे चढ़ि बैठैगो ७३ गगनगरजिछायेमेघ जोर झरिलाये शीतल समीरबहै त्रिबिधभयामिनी। कोकिला कलोलैं करैं मोरबोलैं चहूं ओर कोपिकाम आयेजू अकेली यामकामिनी। ऊधोजी शरीर सुख सबकोऊ चाहतहै कहत बनै नहै पराई पीरपामिनी। मारेडारैंमदन मरोरे डारैं दादुरये दाबेमारैं बादर दबाये मारैं दामिनी ७४ ॥ सवैया ॥ आजरी देखु घटाघन सुन्दर सावनकीनो सुहावन साजरी। साजरी भूषण भोग शिंगारसो तेरोई आजु बन्यो सब काजरी। काजरीआज घरी बड़नेहकी तेरे अधीनखड़े ब्रजराजरी। राजरी वारों तिहूंपुरको मुरलीधरआये मयाकरिआ-

जरी ७५ ऋतुआई सोहाई नईबरषाबढो मोद मयूरनके हियको। हरियाई चहूंदिशि फैलिरही अनुरागबढ़ावतहै जियको। चढ़िऊंचे अटान बिलोके घटा कर कंजसे हाथ गहेपियको। लखि कंजकलीन तड़ागन में मुखमंजु मलीन भयो तियको ७६ ॥ कबित्त ॥ बदरान होइँदल आये कोई भूपन के बुंदवा न होइँ पञ्चबान झरिलायो है। दादुर न होइँ ये नकीव बोलैं ठौर ठौर मोरवा न होइँ हांक शोरन सुनायो है। बगुला न होइँ श्वेतध्वजा भगवन्तजीके चपला न होइँ शमशेरै चमकायो है। बालम बिदेश बिरहीनिन के मारिबे को जुगुनू न होइँ कामयामकी जगायोहै ७७ नजानी वहि देशघनघटाना घमंडिआवैं न जानी वहि देश मेघवा नरेशमरिगयो। नजानी वहिदेश मोरचातक न करत शोर न जानी वहि देश पापी पपीहा जरिगयो। न जानी वहिदेश रसबातहू न जानै कोउ न जानी वहि देश रस मदन मान मरिगयो। न जानी वहि देश ज्ञानरच्यो ना बिधातानाथ न जानी वहि देश ज्ञान ज्ञानिन को हरिगयो ७८ कारे कारे बदरा पवन लै प्रचण्ड करौ घनकी घनाक नेक चित्तहूं न धरिहौं। पापीये पपीहा के सचान लैके प्रान लेउं कोकिलाके कण्ठ कारे काटि काटि डरिहौं। झींगुर झँगार को बोलाइलेउ नीलकण्ठ शेषको बोलाइ सबै दादुर सँहरिहौं। आवन दे सावन रेमेरे मनभावन को रहुरे असाढ़ तेरे हाड़ हाड़ गढ़िहौं ७९ ग्रीषम बिताय ताय

रंग रंग बरसाके बरसि बरसि बारि सरस सोहायेहैं। द्विजबलदेव बलबागन बहारबर बाजतहैं बाजने बिहंगबन गायेहैं। बिशदबसन बकुबिलगबिलग व्योम बेलिन बितान,बनिता अतनतायेहैं। बिज्जुल बिपुल लखि बरही बोलत बैनमैनके बिरादर येबादरहू आयेहैं ८०
साजतसमाजै रूप केते उपराजै दिगदेशन मेंभ्राजै शोर सहित ह्वै आजैरी। दामिनीहूं छाजै दुरि व्योम पुनि बाजै बलदेव हितकाजै मोद महितल राजैरी। चित्त अनदाजै लहि मारुतकोभाजै फेरि घेरि घेरि गाजैसुरभी सों शिरताजैरी। आपनो मचाजै राखिलेती मम लाजै क्यों न बोलि ब्रजराजै ये लखावै घनसाजैरी८१
देके घेरि घुमड़ि घमंगड घहरान लगे तड़पि तड़ाक दे द्विचन्द हू घटागये। द्विजबलदेव अबै त्योंहीं सरसात जात जाहिर जनायो रंग कारेसे भरेभये। कबहूं सुरंग नील सोसनी सबुजसेत संयुत समीर कबेंपीतपट सेठये। सादर ले दामिनि निरादरके ग्रीषमको कादर करतमोहिं बादर नयेनये८२ आजै मेघवानको गयोरी रवकान को भुलानो मगमान को सँभारतहौ जानको। आदि करितान बलदेव गुणगानको लगायो मनध्यान को छटान को घटान को। तड़ित तटानको औ असित लटान को न जातिहौ अटानको ग्रसित ह्वै कटानको। मदन पटानको डेराती नारटानको जो नागर नटानको लयाती या चटान को ८३ ॥ सवैया ॥ धावनलागे घने बदरा चदरासी भराहरी छावन लागे। बंदि सुनावन

लागे शिखी रव दादुररोर मचावनलागे । गावनलागे मलारऔसावन चातककूक उठावनलागे । वैमनभावन आयेनआली विदेशीसबै घरआवनलागे ८४ ॥ कबित्त ॥ चंचलाकी चमकचहूंघा चोख चायनसों चाहिचाहि चित्तमें कृपाण चोटकैरहे । इन्द्रको शरासन शरासन सरसवानबुन्दके बिधानन बिनोदनबितैरहे । कहैनन्दरामतैसेचातक चकोरज़ोर बोलिबोलि बिरहीबलाके बिथवैरहे । आदरकै राखैंमान कैसेहूंकिनादरलैयमके बिरादर येबादरउनैरहे८५ ॥ सवैया ॥ आये असाढ़ घटा लखिके चपला चमकैं घनबीचसमैहैं । एकही बारबड़े बड़ेबुन्दपरैं क्षितिपै छहरानमचैहैं । भीजत देखिउठाय के कासरि लायगरे हरिमोहिं बचैहैं । ह्वै हैं अनन्दसबै ब्रजमें जब गोकुलचन्दजू गोकुल ऐहैं ८६ ॥ कबित्त ॥ तीर पर तरनि तनूजा के तमाल तरे तीजकी तयारी ताकि आई सखियान में । कहै पदमाकर सो उमगि उमगि उठै मेहदीसुरंगकी तरंग नखियानमें । प्रेमरंग बोरीगोरी नवल किशोरी तहाँ झूलती हिँडोरे यों सोहाई सखियानमें । कामझूलैउरमें उरोजनमें दामझूलैंश्याम झूलैं प्यारीकीअन्यारी अँखियानमें८७ भादोंमेंकारी निकरारी राति ह्वै है प्यारी जुगनू जमाति जोर जोर धमकावैंगी । घनन घमंडह्वै के बरषा अखंडह्वै केपवन प्रचंड द्युति दामिनी दबावैंगी । अरुण बरण ह्वै के इन्द्रबधू ठौरठौर मल्ल कवि कहे जोर आपनो जनावैंगी । पावस समैमें जोपै ऐहैंनहीं कन्त तौपै मदन मही-

पतिकी फ़ौजैं उठि धावैंगी ८८ घुमड़त घुमड़ि घुमंडि घनआये घने तड़पन चांडीचढ़ि तड़पनिसोहैंये। झझ-कत झंझाकी मझंझा झूमि झूमनिमें झुमक झराने झीने भिनफिनसोहैं ये। पूछत अगस्त को उदोतजानि पियको पजन लखि अंकुर अनेक उकसोहैंये। सिन्धु तासों दाबी दशहूं दिशान सोहै आज बादरा बिसोहैं सो बिसोहैं बिकसोहैं ये ८९ दिनन घरीको घनघेरि घहरानलागे अवनि अँधेरी ह्वैहै आभा इन्दरनकी। पथिक थोरही थोरी उमिरि अकेलो बीर अकुलाई नाहींगही गैल कन्दरनकी। द्रुमन लतानमें दिखात पै नजीकहीसो दुरिदुरिताई प्रवेततताई मन्दरनकी। कहै पजनेशकैसे दाहने दुर्त्रासोकाम डगरनगीच बीचबाधा बन्दरनकी ९० ॥ सवैया ॥ सावन शोक नशावनहै नहिं राम चरित्र मेरे मनभावन। भावन मोहिं घटा घनकी बनकी हरियाली लगी लुकलावन। लावनकोउ कहै उनको उनको करजोरिकहो गुणगावन। गावनमें सब कोसुखहै हमकोदुखहीदुखहै दरशावन९१ आयहोना ऐसेसावनमें मनभावन पावस कैसे बितायहो। तायहो कातनतापनते मनआपन होय सो लेखभेजायहो। जाय होजल्दचले पुनि पाछहि रामचरित्र अबेर न लायहो। लायहो औरकछूनाहमें जोवनैतोतुहींचट सों चलेआय हो ९२॥ कबित्त॥ दमकै दशोंदिशा दुनाली द्योढ़दामिनि की घनकैं नगारे भारे उर उलझनके। झनकै झनाक झुंड झींगुर निगर बाजैं सनकै समीर तीर शक्र शरा-

मनके। मनके समरमद मेचक झिलमधारे ठनके नकीबदर्प दादुर दमनके। मनके मदन बिन कामिनि कदनकेये आयेबीर बादर बहादर मदनके ९३ बरषै पुनरवसु धराहै उदार जहँ इन्द्रगोप गोपिकाली फिरैं घूमिघूमिहैं। द्विजहरषावैं पयपावैं चहुंओरनते अम्बर सुहावैं शिखिआवैं झूमि झूमिहैं। चपला सहित बहु यामजामैं घनश्यामगति अभिराम अतिचलैं झूमिझूमिहैं। चहुंघा तमालै हैं कदम्ब तालैं दीनद्याल पावस रसालैके विशालै भूमिभूमिहैं ९४ भादौंभरे सरवर नदी नारे धर धर धरापर मेघबुंद झर्झर झरति है। भरि भरि नयननमें नीरनिमैन मारी हारी बरि बरि अरि अरि बीरमें कहतिहै। धरिधरि देखौ करहियेहोत धरधर थर थरकांपै धर धीरना धरतिहै। हरि हरि जीवजात देखेलता हरिहरि हरिहरि हरहर रसना रटतिहै ९५ अम्बुज तटान फैलि फूटत फटान जैसे धावत नटान छवि छाईहै छटानकी। चातक रटान नदी नद उपटान जल अंगल बटान महा मारुत कटानकी। भीजत पटान बुंद चुवत लटान पुरवी तन लपटान मानो मदन घटानकी। पीवके तटान ओढ़े कुसुमी पटान अरु ठाढ़ीहै अटान लेत लहरै घटानकी ९६ बादर पटान कारे सटित सटान जनु धावत नटानन ज्यों बिज्जु सटकानकी। अम्बर झुमटानज्यों लपटत भुजटान देव बिजय निशान बुन्दउदित कटानकी। भनै जगेश्वर ऋतु-पावस भट जानियो चातक रटान कूक कोयल हटान

को। नदके तटान ओढ़े कुसुमी पटान ठाढ़ी देखत अटान चढ़ी लहरें घटान की ९७ छवै हैं नहिं इंदीवर ह्वैहैंना कलिन्दी माहिं नाहीं अब सखी श्याम बिन्दीहू लगायहैं। आनि जनि नीलमणिभूषणनिमेरी बीर दूरिकरि येरीमृगमदको न लायहैं। आलीकाकपालीकी न सुनिहैं रसाली कूक अबतो तमालन के कुञ्जमें न जायहैं। देखिहैं घटानको न चढ़िकै अटान वाम श्यामसंग बैर अब हमहूं चढ़ाय हैं ९८ झिल्ली झनकारें पिक चातकी पुकारें बनमोरन गोहारें उठै जुगुनू चमकिचमकि। घोरघनकारे भारे धुरवाधुरारे धामधूमन मचावैं नचै दामिनी दमकि दमकि। झूंकन बयारी बारिलूकनलगावैं अङ्ग कूकनभभूकन सों और मो खमकिखमकि। कैसेरहैं प्राण प्राणप्यारेयशवन्त बिन छोटी छोटी बूंदन सों बरसै झमकि झमकि ९९ लटकिलटकि मेघ बारिझहरनलागे तड़पितड़पिबिज्जु करै रव घोरिघोरि। फैलीहरियाई नीरबिहरी बहूटी बीर बापी सर सरिता करार जल छोरिछोरि। भनत दिवाकर बरस बायु झूंकिझूंकि झँकिझँकि बिपिन बिटपदेत झोरिझोरि। वोहीकाल बालब्रज साँवरो पियाके सेज कुच चुभुकाति मुसक्यात मुख मोरिमोरि१०० चीरफहरावन झुलावन संयोगिनको हियेहुलसावनरिझावनसोहायोहै। सुधिबिसरावन तरसावन सतावन जगावन अंतन शोर मोरन मचायोहै। धीरज गवावन बिझकावन झुकावन तावन तड़ित रसाल घन

धायो है । बिन मनभावन बढ़ावन बिरहप्रान सावन बितावन बियोगिनको आयोहै १ पावसके आवतइत सरवरमाहिँ हंस जलमाहिं होति देखी नित कलुषाई है। मानसर चलिबेकी सुरतिलगाई निज हंसिनी हु-बंसिनीहू हिये यादिआईहै । तहांके निवासी पक्षीप-क्षिनी कहनलागे प्रीति परदेशीकी हमैंना सुहाईहै । कैसी अद्भुतबरषाकी ऋतुआई जो संयोगिनि दुखदबिर-हिनि सुखदाईहै२ सासुतौ न्यारी ननँद सासुरेसिधारी रैनि अँधियारी कारी सूझत न करहै । प्रीतमकोगौन कविरायनसोहाय आली पवनहहायो अरु लायेमेघ झरिहै । सङ्गना सहेली गृहमांझ हैां अकेली अरु ब-यस नवेली तन लाग्यो मैनशरहै । आई अधरात मेरो जियरा डेरात जागु जागु रे बटोही यहां चोरनकोडर है ३ सरतट सुंदर नवीनगृह छाजै पुनि झिमि झिमि झिमि झिमि मेघकेतड़ाकेहैं । शोभित पलँग पर का-मिनी बहार पेखि पतिसँग हँसिहँसि सुखके झनाके हैं । बारुणीको पानकरैं गिजकसों फेरि फेरि शाल-ग्राम देखोकैसे मदके सनाकेहैं । जीवभनै चित्तसो अ-नन्द ऐसोकौनअहै बादरघुमैंडै ऋतुपावस झनाकेहैं ४ आइये जु श्याम घनश्यामलता मुरझगई प्रेमउरझाहै जुबिचार चितलाइये । सूखीहोय नालपैं सरोज कुंभि-लायगये चातक मनमोर गर्ज बांसुरी सुनाइये । उर बनमाल बक पंगत फबीहै किधौं पीतपट फहर बिज्जु नायु सरसाइये । कैसे बचैं हाय सुकुमाकर मरोरैं धरें

समझ मननीत नेह मेह बरसाइये ५ सुन्दर सरस ऊंचे महलमजाके मंजुझंझरी झरोखनमें जोयबोईकरिये। तड़ित प्रचंड औ घनानके घुमंडनमें प्रीतिरस प्यारीते समोयबोई करिये। परिपरियंकपै सुनीतनवअङ्कताय ह्वैकर निशङ्क लङ्कगोयबोई करिये। अधर कपोल रसरङ्गमेंमगनहोय गरकगलेफबीचसोयबोईकरिये६॥ सवैया॥ ह्वैहैं धुरवा धुरवारे अली द्विजदेव चहूंदिशि दौड़त ह्वैहैं। त्यों मनमत्त सखापै शिखी मनमोहनकूं को बिलोडित ह्वै हैं। पावस काल करालहहा ससा एकहू सङ्ग न छोड़त ह्वैहैं। फूलसे वै अंग पीउकेहाय घनी घन चोटन ओड़त ह्वैहैं ७॥ कवित्त॥ सावनी के ब्याज आज आई गाँव गाँवनते भावनते लोकुरी क-रनप्रसूनकी। गुरुजनहून सुहगुनन रिझावैं तहां गोरी गुनवती गाय तानैं टाह दूनकी। द्विजदेव सोहैं सबै अङ्गन सुरङ्ग चीर झालरैंझरोकौलगीं कोरनखूनकी। इन्द्रके बधूनकी सुदेखी छबि ऐनेहा हूलोकि देखुरी गोविन्द को बधूनकी ८ धुन्धुरित धौर धुरवान की मुकाईनभ जलधर धारैं धरा परसनलागींरी। द्विजदेव होती कछु ललित कछारैं त्यों कदम्बन की डारैं रस बरसन लागींरी। कालिन्दीते देखि बनबेलिनकी बन-क नवेलिनकीमति अतिसरसन लागींरी। बेगिलखु पातीवे सँघाती वाकोपालै देखु पावसअवाती ब्रजदर-सन लागींरी ९ कूकिकूकि केकी हिय हूकनि बढ़ावैं क्योंन बिषधरभोजनके अतिउतपातोरी। साजिदलबा-

दरडरावने डरावैं करैं येतो घनश्यामजूकेपरमसँघाती री। अजगुति एक तोहिँ बूझन चहति आलीद्विजदेव कीसोंकछु बूझत सकातीरी। अबला अबलजानि मू-नोपरीसेज माहिं केसेछन जोन्हन की दरकति छाती री१० दीनोमनरंचऊन चीठिन बसीठिनपै कीनोकान कानको न दीनअरजनिमें। द्विजदेव कोमों जऊँ हारी वे सिखायतऊँ सुमुखि सखीन को सुनीन बरजनिमें। येरीमेरी बीरधीर कौविधि धरैगी होय चातक चवा-इनिकी चोखी चरजनिमें। मेचक रजनिमें कदम्ब ल-रजनिमें सुमेघ गरजनिमें तड़ित तरजनिमें ११ बूझेहून सूझत सुघाटबाट जलथल बिनशी सकल मरयाद सब ठामकी। द्विजदेव देहरीके बाहर धरतपग फेरि सुधि करत न धामकी न ग्रामकी। बड़ति अथाहे कुल धरम निबाहे कौन बावरी बिलोकि यह भूकनि सुदामकी। पावस अँध्यारीहुती रोसिये डरारीतापै आठोयामरस बरसनि घनश्याम की १२॥ सवैया॥ होतेरहे नवअंकुर की छबि छाहँ कछारन में अनियारी। त्यों द्विज देव कदम्बन गुच्छन गईनये उनये सुखकारी। कीजिये कोरा सनाथ इन्हैं चलिये बनकुञ्जन कुंजबिहारी। पा-वस कालके मेघनये नवनेह नई वृषभान कुमारी १३॥ कवित्त॥ घन घिरिआयो बन सघन तिमिर छायो रैन को डरैंगेलेखि देखियो दृगनतें। नन्दजू कहत वृषभान नन्दनीसों नन्दनन्दराहिँ घरैजाहु लैके बेगिबनतें। गुरु के वचनपाय प्रेमकी रचनभरे चले कुंजतीर तरुदेखि

के बिपिनतें। यमुनाके कूलमें रहसि रसकेलि मयी ऐसे राधा माधौ बाधाहरो मेरे मनतें १४॥ सवैया॥ बादररेख उठी नभ में पुनि फैलिगई अति आतुरताई। श्यामतमालते भूमिभई तमपुंजछये तिहि औसरआई। घोरघटा घनधारलगी अँधियारभयो बिजुरी अरराई। लायहिये हरिको नँदराय डेरायउठे गउवैं छितिराई१५ कोउ जाइ शिखीगणा को सिखवै अनखातन क्यों मघवा खलसों। पपिहाऊ पियै किनजायके नीर अघाइके गोकुरके थलसों। अब ऊधो दया करि आये इते ब्रजबासिन पायो महाफलसों। थल बावरे दावरे बीचकरैं रह्यो मीनन काम कहा जलसों १६ करकी पहुरी जबलागि गई जबते ऋतुपावसकी बरकी। बर की सुधि आयगई जबहीं बरषैं बरषा वो धराधरकी। धरकी नभचन्दबहादुरके सजनी न लखैद्युतिचादरकी। दरकी छतिया सुमिरे बतियाँ पतियाँ न लिखै अपने करकी १७॥ कवित्त॥ भादौं गँभीरनीर बाढ़ो नदीनारन में उतरै न बटोही चित्त चञ्चल भ्रमावैंरी। पापीपपीहा मोर शोरकरैं बागनमें बाउरी बलाहक देह दावा सों लगावैंरी। करिके शिँगार मोतिनसों भराय माँगमाखन कविकहैं नेम आपनो जनावैंरी। जिया हुलसावैं तिया लोने गीतगावैं हम रामचन्द साहव की साहवी मनावैंरी १८ श्यामघन आवैं घेरि बिज्जु चमकावैं मन मदन जगावैं कूक बिरही मचावैंरी। मोहन पै जावैं ममसदनको लावैं बलदेव गुणगावैं हित तोसों सरसा-

वैरी । आनँद मचावैं तब पासहूभावैं गुणामारुत चलावैं हठि हियो हुलसावैंरी । अभिमत पावैं दुख नेकहू न छावैं चित धीरज बचावैं बिरहागिको बुझावैंरी १९ केते रूपताने धनपावस कमाने डरनेकहू न माने गहि दामिनि कृपानैरी । घूमि घहराने बलदेव बल पानै अरु देतहैं निशाने सो किसाने सुख जानैरी । आवत शौकाने भेद ताको पहिँचाने मनमदनकी खानै सरसानै उंदवानैरी । कीजै ना गुमाने नेक मेरीकही माने अम झाने हरिमाने करिआनै मुद ठानैरी २० घन घहरात थहरात अङ्गअङ्ग सब नीर छहरात राततम अतिछायो री । द्विज बलदेवकहै दादुरि दरारैं और झीली झन-कारैं मोर शोरको मचायोरी । बचीहों बसन्तते उपाय करि प्राणरहेग्रीषम बितायकै अकेलीकरि पायोरी । पावस कृपाणकरि चपलाकी जीतिवेको अबहीं बराय गयो फेरि झपिआयोरी २१ कैसे उपायपाय पावस जगावै मैन जियरा डरातसुनि मेघके नगारेको । द्विज बलदेव कहै दादुरि मचायो शोर मोर बरजोर और जोर जलधारेको । चलत समीर शुचि त्रिविध न धीर रहै दामिनी दमकि ललचावै जी हमारे को । एते तौ सबाँरि साज नितही सतावैं सखी दोष कहो कौन है बिदेशी वै बिचारे को २२ काजरसे कारेघन साजिकै सिधारे अब देत ये नगारे बरबारे जलधारे हैं । आनँद मचारबलदेव हितकारे उमगात नदनारे ह्वै किनारेसम धारेहैं । मदनप्रचारे सुनिझीली झनकारे दिनआतपहू

गारे नभतारे ना निहारेहैं । चोर पटवारे नखअग्र गिरि धारे बनमाल उरडारे ते हमारे रखवारे हैं २३ ॥ सवैया ॥ घेरी घटा घनकारी चहूँ दिशि शोर कठोर रहे करि दादुर । बन्द छटा छबिछाई हरी भरी भुम्मिलतानन की बिछीचादर । आदरसों रहे कूकि शिखी निशि कारी अँध्यारी करै हियकादर । ताल तमाल न शाल बिशाल रसालनपै बरषे घनेबादर २४ ॥ कबित्त ॥ मालती बितानपर भौंरन निवासकीन्हो मदमतवारे मन्द मन्द गुरगावहीं । कहै नन्दराम जोर मोरन को शोर सुनि उरमें दरारहोत भीली भहरावहीं । नद उफनात नदी नारनको जातघन घूमि घहरात नये नेरेनीर आवहीं । नज्जतन देखियत सज्जल जलदकारे कज्जल गिरीश कारे उपमा न पावहीं २५ देखौ नन्दराम यह पावसी समाज जोरि आइगो मनोज महि मण्डल समातना । देखुरी घटाको घेर ह्वै रहो कटाको साज याहू ते घटा को जौन जीवन देखातना । पटको पटाको सुनि छाती में छटाको छतहोतहै भटाको हित राँको दरशातना । जायहै अटानप्रान देखिके अटाकारूप बिद्युत छटाकारी चटाको सहिजातना २६ बाटिका बिहङ्गनपै बारिगा तरङ्गन पै बायु बेग गङ्गन पै बसुधा बगार है । बाँको बेनु तानन पै बङ्गले बितानन पै बेश औधपानन पै बीथिन बजारहे । बृन्दाबन बेलिनपै बनिता नवेलिनपै ब्रजचन्द केलिनपै बंशीबटमारहे । बारिके कनाकन पै बद्दलन बाँकनपै बिज्जुली बलाकनपै बरषा बहारहे २७ हरखे

हरीलहवै अमरखे अनङ्ग हेत करखे कलापी चोपि चातक चमूपिली । उमड़े घटा हैं मानि करने छटा हैं छटाफेरत पटाहैं ठटा शूरकी हटाकिली । घेरिकै अड़ेहैं बिन बूंदन लड़ेहैं औध आनँद खड़े हैं देखि दादुर बड़े दिली । कादर बियोगी हारि चादर बलाकफेरि बादर बहादुरको नादिर फतेमिली २८ येरी ऋतुपावस में मोर घोर रोरकरैं ठौर२ मंडुक कठोर शोर वैरह्यो । देखिकै बकालीरी कपाली अरिजाली हाली आली बनमाली बिन काली मोहिंकै रह्यो । दामिनी दमंक बीच यामिनीबिलोकि नित कामिनीसकात बातमुख पै न धैरह्यो । झिल्ली झनकारैं मेघवारिधारधारैं पिक कोकिल पुकारैं यो महेशदत्त ह्वैरह्यो २९ ॥ सवैया ॥
छोट नदीनद मार्गहि रोंकत दिसु बिदुर्सहिँ धारबही । छान छवाय सुखी सबलोग भेदेखत हर्ष बहार सही । नारिन मार बढ़ो झरिलागत कोकिला शब्दहिकूकि रही । द्विज शालग्राम हरि:शरणं ऋतु पावस भूमि झमाकि रही ३० आई असाढ़की कारीघटा घहरान लगे बदरा चहुँओरकै । दूजे जो कन्त बिदेशगये सुधि पाई न नेकरही मगहेरिकै । उमराय स्वभाउ बिहङ्ग कहे मृदुबैन कहै जो सखी कहे टेरिकै । सोने से चोंच मढ़ैहों तेरी बलिजैहों पपीहा पिया कहुफेरिकै ३१ ॥
कबित्त ॥ सावन के मास मनभावन के सङ्ग प्यारी अटा पर ठाढ़ीभई घटाअँधियारीमें । दामिनीके धोखे चकचैांधे दृग कबिनाथ छबिनसों मुरि दुरै पियअङ्ग वारी

में। कोटि रतिवारौं ऐसी राधाजूके रूपपर रम्भारङ्क कहा शङ्कशचीके निहारीमें। पागिरही रसजागिरही ज्योति लाजनिमें नेह भीजोवेह मेहभीजो श्वेत सारी में ३२ गये.कहि आवनन आये यहि सावन में ऊधो मनभावन भुलाय रहेहैं तहीं। ह्वैरही बिहाल बाल ब्रजको गोपाल बिना रैन दिन नैनते अपार धार ह्वै बहीं। बैठि जन पुंज ठाम यमुना निकुंज धाम छाँड़ि श्याम पाहि वहां सोहत नहींकहीं। गरजैंहैं घन घोर लरजैं हैं बन मोर नन्द के किशोर सुनि अरजैं अजौं नहीं ३३॥ सवैया॥ सावन के दुखदावन ये घनश्याम बिना घन आनि सतावैं। तैसे मिले तिन्हैं आनियमोर सुजोरके शोरजरेपै जरावैं। प्यारेको नाम सुनायसखी हिये पापी पपीहा ये शूल उठावैं। नेह नवेली भरी अबहो दिन दोइक पीय जो और न आवैं ३४ भादौं की कारी अँध्यारी निशालखि बादरमन्द फुही बरसावैं। श्यामाजी आपने ऊँचे अटापै छकी रस रीति मलारहैं गावैं। तासमै नागरके दृगदूरिते चातक स्वाति की मौजमें पावैं। पौन मयाकरि घूंघटटारै दया करि दामिनी दीप देखावैं ३५ चहुँ ओरन ज्योति सँगावै किशोर जगी प्रभा जेवन जूटीपरै। तेहिते झरिमानों अगार अनी अवनी घनी इन्द्र बधूटी परै। चहुँनाचैं नटीसी जराव जटीसी प्रभासेपटीसो नखूटीपरै। अरी एरी हटापटी बिज्जु छटाछटी छूटी घटानते टूटीपरै ३६ आई सोहाई नई बरषा ऋतु रीझ हमारी सोई पिय

कीजिये । जैसेही रङ्गलसै चुनरी मम तैसेहि पाग तुम्हूं रँगलीजिये । झूलापै झूलहिं एकहीसंग मुबारकएतो कहो पुनि कीजिये । जैसे लसै घनश्याम सों दामिनि तैसे तुम्हारे हिये लगि भीजिये ३७ ॥ कवित्त ॥ चातक चिहुँकमत मुरवा कुहूँकमत झींगुर झिहुँकमत भेकी मननाय मत । चकवा चिकार मत पपिहा पुकार मत बूँदझर धारमत धारवहराय मत । कृशालालगाय मत पीर उपजाय मत वालमविदेश पाय मैन तनतायमत । पौन फहरायमत चपला चवायमत धायमतधुरवा औ घनघहरायमत ३८ उमड़िघुमड़ि घनआवत अटानचोट छन घनश्योति छटा छटकि छटकि जात । शोर करैं चातक चकोर पिक चहुँओर मोर ग्रीव मोरिमोरि मटकिमटकिजात । सावनलौं आवन सुनोहै घनश्याम जूको आंगनकों आय पाय पटकिपटकि जात । हिये बिरहानल की तपनि अपार उरहार गजमोतिन को चटकि चटकि जात ३९ ॥ सवैया ॥ सजि सूहे दुकूलन बिज्जु छटासी अटानचढ़ी घटाजोवतीहैं । रँगरातीसुने धुनि मोरनकी मदमातीसँयोग सँजोवती हैं । कहिठाकुर वेपिय दूरिबसैं हम आँशुनते तनधोवतीहैं । धनि वे धनि पावसकीरतियां पतिकी छतियालगी सोवती हैं ४० कूकिहैं केकी गिरीनके ऊपर भूपर काम कमानलै झूकिहैं । झूकिहैं चन्दनधूनके बुन्दन फूकिहैं मन्द समीरन चूकिहैं । चूकिहैं प्रान बिना घनश्याम के श्यामघटा तनदेखतहूकिहैं । हूकिहैंदैके हियोकरि

टूक अँध्यारीनिशामें पियाकहि कूकहै ४१॥ कवित्त॥ पावस अमावसकी अधिक अंधेरीराति साहुहै प्रवास मेरी ननँद नदानजू। सूनो सुखभौनहै परोसको भरोस कौन पाहरू न जागतपुकारपरे कानजू। पंडितप्रवीण प्यारो बसत विदेशपति यातेहै अँदेश अवरसिक सुजानजू। एहो ब्रजराजराजसुनिके अरजमेरीआजु बसि जैये बसिजैये तौ बिहान जू ४२ घन मतवारे गज्ज पौन हरकारे बकबोर निरवारे मोर ढाढ़िनकी तानपर। बिज्जु बरछीनकी चमक चहूं ओरनते त्यों नकीव चातक पुकारन प्रमानपर। देखिदेखिकांपत बियोगी जन कातर सुबेनीकविकहैं इन्द्र धनुष निशान पर। कोकिलकी कुहुक दुहाई फिरी ठौरठौर पावस प्रबल दल आयो महिमानपर ४३॥ सवैया॥ केकीकिकूक पिकी कि पुकार चहूंदिशि दादुर दुंदि मचायो। भूमिहरी चमके चपला अरु श्यामघटाजुरिअम्बर छायो। ऐसेमें आवन होइलखू अबला लखिलाल सँदेश पठायो। बावनको परभो बिरहासो अहो मनभावन सावन आयो ४४ आवतेगाढ़ असाढ़ के बादर मोतनमें अति आगि लगावते। गावते चातकचढ़े पपिहा जिन मोसों अनंगसों बैर बँधावते। धावते बारि भरे बदरा कविश्रीपति सूछियरा डरपावते। पावतेमोहिँ न जीवते प्रीतम जोनहिं पावसमें घरआवते ४५॥ कवित्त॥ बोलतब मोरगायो चंदनमलीनभयो चातक रहनि बकी काहेते भुलानीहै। कोकहू मिलेहैं तिन्हैं दुख सरसान्यो अति

हरय चकोरनके प्रीति कुम्हलानीहै। बंशीधर काहे भौर मंडित कलोलकरैं कोकरि अडोलरहे सौत मन हानीहै। चंचला हेरानी घनबानीको न लेसरह्योकौन रीति पावस की आजु दरशानी है ४६ उठे घनजाल देखि दामिनि कपाल देखि देवराज चापदेखि त्रास अति पावतो। बुंद वृन्दपातदेखि सूर्य अप्रकाश देखि दिनहूको अंतरदेखिचैनहूं न पावतो। नभको वितारदेखि बायुसुख चारदेखि अति अंधकार देखि मोमेंमन लावतो। होतो उहांपावस तौ येरी सखी बातसुनौ बीस बिसे आजही हमारो कन्तआवतो ४७॥ सवैया॥ काहे को रूसत पावसमें इन बातन तोहिँन कोऊ मराहै। पौनलगे लहराती लतातरु कुंजकदम्बमें केकीकराहै। बोल सुहावने चातककेलगें इन्द्रबधू गगाधाईधराहै। बोलि पठाई उतै उनये उनये नये देखिनये बदराहै ४८ बहु फूलैं कदम्बनिकुंजनमें अरुभावतो पौनवहैनितमें। बरजैं जनिकोऊ मयूरनको गरजै घन आपनेहीमतमें। शिवलालभयो मनभायो जितो अबऔर करौगातितो नितमें। बरसाइतमें घरआइगये बड़भाग भटू बरसाइतमें ४९॥ कबित्त ॥ श्यामघन आये आली श्याम परदेश छाये श्यामकंद गात्रआगि अंगमें बढ़ैलगी। श्यामकंठ बोलिसुनि श्यामकंठमेंरिआवै कोकिलाहूकूकिकूकि प्राणन कढ़ैलगी। झिल्ली मंडूक कूक सुनिहिये होत हूक रामदास तातगुणनिधिपै चढ़ैलगी। रैनिअंधियारी होन लागी द्रुम बाढ़ी दशाकन्त बन्त प्यारीकू

पयानासो करैलगी ५० सीरीसोरी बही चहूं ओरते बयारि बड़ी घटन बगारि बड़ो आसरो सेरैरहो। याहीहेतु छोड़िकेनदीनि नद येतेदिन तेरी आशागहेतेरी ओर तकतैरहो। नीरदतू आपनो बिचारि देखु नाम शम्भुकहांऐसे औसरमें ऐसो हठलैरहो। गरजि २हुलसायो हियो चातकको बुंदनके समैमें निमुंद मुखकै रहो ५१॥ सवैया॥ दादुरि चातक मोर करो किनशोर सुहावन के भरुहैं। माहतेही सोईपायो सखी मोहिं भाग सोहागहुको बरुहैं। जानि शिरोमणि साहिजहां ढिग बैठोमहा बिरहा हरुहै। चपला चमको गरजो बरसो घन आशपियातो कहा डरुहै ५२ ऊंचीअटापै लखैं घटादोऊ दुहूंनको ह्वैरहि रूप कलासी। बेणी बड़ेबड़े बुंदनते इकबारही बारिध कीन हलासी। चौंकिचली बिचली गचपै लचकी कारहां कुचभार छलासी। त्योंघनश्याम गही अबला फिरिकै गरे लागि गई चपलासी ५३ ॥ कवित्त॥ तीरहैन बीरकोऊ करैना समीरधीर बाढ़ोग्रम नीरमेरो रह्योना उपाउरे। पंखाहैन पासएक आसतेरे आवनकी सावनकी रैनि मोहिं मरत जियाउरे। संगममें खोलिराखो खिरकी तिहारे हेत होतिहैं अचेत मेरी तपनि बुझाउरे। जानु जानिजानोकौन कीजिये उतालगौन पौनमीतमेरेभौन मन्द २ आउरे ५४ दिशि बिदिशानते उमड़ि मंढ़ि लीन्हो नभ छोरिदिये धुरवा जवासेयूथ जरिगे। डहडहे भये द्रुमरंचक हवाके गुण कुहकुह मुरवा पुकारि

मोद भरिगे। रहिगये चातक जहांके तहां देखतही शोभनाथ कहूं कहूं बुंदहून करिगे । शोरभयो घोर चहूंओर नभ मंडलमें आये घनआये घनआयकेउमड़िगे ५५॥ सवैया ॥ हरीहै सबैसुधि बुद्धिहरी तियसेजपरी तन चेतनरीहै। नरीहै कहां रति रूपरतीकन सोनेके सांचेढरी पुतरीहै। तरीहै मनोजमहानँदकी नृपशंकर शोभित लाल डरीहै। डरीहै खरी यहि पावसमें शिखि शोरसुने लखेभूमि हरीहै५६ धावन भेजु सखी वहिदेश बसे जेहिदेश पियामनभावन। भावनभोरया लूकलगी तनबोच लगी जियरा भरमावन। सावनमें न भयो हनुमन्त दोऊमिलि झूलि मलारहि गावन । गावनमोहिं सुहातनहींबदरा बदराहलगेझुरिधावन५७ कबिवेनीनई उनईहै घटा मुरवा बनबोलत कूकनरी। छहरै बिजुरी क्षिति मंडल छवै लहरै मनमैन भभूकनरी। पहिरो चुनरी चुनिकै दुलही सँग लालकै झूलिये झूकनरी। ऋतुपावस योंहीं बितावतीहो मरिहौफिरिबावरी हूकनरी ५८ ॥ कबित ॥तीजनीके रोज सबसजनी गईरी उहां झूलन हिंडोला ब्रजबाला बीर बरबर। तोयनिधि तौलों उठिधुरवा धरालों घूमिधाराधर धरिगा बरसि परो धरधर। मोहिं तौ कन्हाई करिकामरी बचाइलीनो और सबभीजी तिनतनहोयँ थरथर। ऐसो बरताउं यहिगाउं मो गरीबिनीकोदेखि सूखी चूनरी चवाउ फैलो घरघर ५९॥ सवैया॥ चमकैं चपला झमकैं जुगुनू रव झींकनको भय छावत हैं।

पिक झिल्लिन को गन मोरनबों मिलिके अति शोर सुनावतहै। कबिगोकुल प्यारी बिना गिरिधारीकहो अबकौन बचावतहै। उतिओर लखो छिति छोरछिते घन घोरतसों चलो आवत है ६० बुरवानकि वारनि मानो अनंगकि तुंगध्वजा फहरान लगी। नभ मण्डल ह्वै छितिमण्डल छवै छनजोति छटा छहरानलगी। मतिराम समीरलगे लतिका बिरही बनिता थहरान लगी। परदेशमें पीवन पायो सँदेश पयोद घटा घहरानलगी ६१ ऋतुपावस श्यामघटा उनई लखिके मन धीरधिरातो नहीं। धुनि दादुर मोर पपीहनकीसुनिके सन चित्त थिरातोनहीं। जबते बिछुरे कबिबोधाहितू तबते उरदाहु बुझातो नहीं। हमकौनते पीरकहैंजियकी दिलदारतौ कोऊ दिखातो नहीं ६२॥ कबित्त॥
फुही फुही बुंदझरैं बीरबारि बाहन ते कुहू कुहू सुनि परै कूक कोकिलानकी। ताही समय श्यामा श्याम झूलत हिँडोरेचढ़े वारौं छबि कोटिनमैं रति पंचबान की। कुण्डल लटक सोहै भृकुटी मटकमोहै अटकाचटक पटपीत फहरानकी। झूलति समयकी सुधि भूलति न हूलतिरी झूकनि झुकनि उझकोरनि भुजानकी ६३ कारे २ बादर डरावने लगत अब दादुर की धुनि सुनि भूले दयातनकी। बुंदकी झकोर झकझोर पुरवाई करै हरै मनमोह घोर चहूँ ओर बन की। हरी २ लतिका करावै घरी २ यादि इन्द्रगोप लखि लालमुक्त मालगनकी। नन्दके कुमार बिन लागो उर मार कधो

पपिहा पुकार झनकार झींगुरन की ६४ ॥ सवैया ॥
परकारज देह को धारे फिरौ परयन्य यथारथ ह्वै दरसौ । निधि नीर सुधा के समान करौ सब भाँतिन सज्जनता सरसौ । घन आनँद जीवनदायक हौ कछु मेरियो पीर हिये परसौ । कबहूँ वा बिसासी सुजान के आंगनमो अँशुवानहु लै बरसौ ६५ भजि वेगिचलो मथुराको भटू बचिहै न कोऊ करि जोरनरी । घिरि कारी डरारी घटा नभते लटकी धुरवानकि डोरनरी । अति चाव चढ़ी लहकै चपला बहकै वरहीन के शोरनरी । वह पाछिलो बैर सम्हारि पुरन्दर चाहै अबै ब्रज बोरनरी ६६ भूमि हरी चहुँ ओर भरे जल है सुथरो ऋतु आई अषाढ़ी । मीठो महाधुनि मोरन की कबिराज सुने सबकी रुचि बाढ़ी । झूलत गोपी गोपाल मिले वृषभानके आँगन भोरहै गाढ़ी । हेरे हरी मिस वाकी बटाभरि फेरि घटा में अटा पर ठाढ़ी ६७ उत कारी घटा इतमों अलकैं बक पांति उतै इत मोति लरी । उत दामिनि दन्त चमंकैं इतै सुर चाप उतै इत भौंह तरी । उत चातक तौ पिउपीउ रटै बिसरै न इतै पिउ सक्र घरी । उत बुन्द अगाध इतै अँशुवा बिरहीते मनों घन होड़ परी ६८ ॥ कबित ॥ आयो सखि सावन बिदेश मनभावन जू कैसे करि मेरो चित हाय धीर धारिहैं । ऐहैं कौन झूलन हिँडोरे बैठ सङ्ग मेरे कौन मनुहारि करि भुजा कंठ धारि हैं । हरी चन्द भीजत बचैहै कौन भीजि आप कौन उर लाइ काम ताप नि-

रवारिहैं। माव समैं घनपरि कोक बहुभेहै हाय कौन मेरी प्राणप्यारी कहिकैपुकारिहैं ६९ घहरघहरघहरात चहूँघाते घेरि सघन घुमड़िघनघन बरसत हैं। छहर छहर छहरात छितिमण्डल पै छूटिछूटि बुन्दन से छरा को छरत हैं। भहर भहर भहरात भौन भीति भारी भीति भारी भारती के भौनहूँ भरत हैं। थहर थहर थहरात मेरो गात आली बिजय अनन्द बिदेश में बसतहैं ७०॥ सवैया॥ भूमि हरी भई गैलैं गईं मिटि नीर प्रवाह बहावे बड़ाहै। कारो घटाने अँधेरो कियो दिन रैनिमें भेद कछू न रहाहै। ठाकुर भौनते दूसरे भौन लौ ज्ञातबनै न बिचार सहाहै। कैसेके आवैं कहाकरैं बीर बिदेशी बिचारे न दोष कहाहै ७१ घूमि घटाघन की गरजैं चमकैं चपला छिति छ्वै फिरैं फेरी। शोर करैं चहुँ ओरते मोर जुरीकरैं कोलिया कूक घनेरी। गोकुल सीरो समीर लगी केहि भाँति सो धीर रहैंगे घरेरी। मोहिं बिना यह सावनकी निशि भावन कैसे बितायहैंयेरी ७२ घेरिघटा उनईचहुँघा सनएकमेंबिज्जुछटा छबिछायहैं। ग्रीपतिरायकहा करबी अरबी करिके पिक चातक गाय हैं। कारो पिछौराउतारि इहा अवचूनरीलाल अनूप सोहायहैं। होंजुसुनी घरी चारिकमें तिया आजु तिहारे पिया घरआयहैं ७३॥ कबित्त॥ एकतौ बिदेशो बिन सेनेही दुखीहैं हम दूसरे प्रचण्ड लागेपावस सतानेरी। बसतजू बादरकोआदर न मेरेयहां अजब अनारीआप बिरहबढ़ानेरी। बर्षिबे

कोईघदेतौ जायमथुरामेंबसे सांवरे मिलेंवेतोहिं सौत कोविक्तानेरी। गरजञसालेनेक हरजइमारोकरे गरज नजानेंमेघ गरजनजानेरी ७४ कैसेंचितचोरें गुणा पवन झकोरें मोर अति करजोरें शोरें सुखमावदनके। द्विज बलदेव बरबानिक बसनबेश बीजुरीलैचायेहैं बिरादर मदनके। तूही यशलीजे दरशायनेक दीजे अधरामृत को पीजेमोद दाडिम रदनके। प्राणप्रिय पावसअनंद अतिछावन ये आयेवीर सावन सोहावन सदनके ७५ काजरसे डारेलखि मोरगण भारे कूककीन्हेंदईमारे मोदछाये अतिमीनको। द्विजबलदेव बकपंगति विशेष ताई त्योंही शोर मचिडत मँडूक गन पीनको। भरत सनाके नाके नाकेसब घेरिलिये कैसी करिवे है उर शोभ धरदीनको। धंधुर धुधारे बराधारे अतिभारेसारे आयेघनकारे डरपावैं बिरहीनको ७६ ॥ सवैया ॥ नई नेरखी भईहो कहा तुमहीं उमही रहती मति दीन्ही दई। दई कान्ह की बीरोम लेत भटू तुम्हैंया बतिया कहो को सिखई। खई सें न बडो भयो कोऊ कहूं छिनहीं अतिहीरिसमधरिगई। गईभारमें नाहीनाहीं करा लखो कैसी घनेरी घटा उनई ७७ प्यारो मनावत प्यारी न मानति बैठिरही करि प्रीति की टूटन। कारी घटा घहरान लगी छुटगी तब चौंकि चितै चहु खूटन। आय डेराय लगी पिय के हिय सो कवि देव सुनो सुख लूटन। मानतो छूट्यो मरूकरिके मनतेनहीं छूटति मानकी छूटनि ७८ दुख दूरभयो वहि ग्रीषम

को करिबे पिक चातक गानलगे। चपला चमकैलगीं चारों दिशा निशिमें जुगुनू दरशान लगे। गिरिधारन पावस आवतहीं बकवृन्द अकाश उड़ान लगे। धुरवा सबओर दिखानलगे मोरवानके शोर सुनानलगे ७९॥

कवित्त॥ कारी अँधियारी रैन बीजुरी चमंके सैन दादुरके बैन मेघ बरसै फुहूँ फुहूँ। पवन झकोर झोर झिल्लिन की घोर शोर चातक चकोर मोर कुहुँकैं कुहूँकुहूँ। ताहीसमै सुधि मनठानी मनमोहनकी ढुरै लागे आंशु नेक नयनसे लुहूँ लुहूँ। मसकि मसकि प्यारो ज्यों ज्यों लपटात जात त्यों त्यों मुख मोरि मोरि करत उहूँ उहूँ ८० लपटि लतासी परयंक पटियामें रही डोलैना डोलाये कर पायन दुहूँ दुहूँ। केती केती भांतिनसों हरिजू बुझाय हारे कोकिलाके नाईं जैसे कुहुँकै कुहूँ कुहूँ। मेरी ओर फेर मुख बीरहू न खात काहे उरसों लगाइ कर बोलत मुहूँ मुहूँ। मसकि मसकि प्यारो ज्यों ज्यों लपटातजात त्यों त्यों मुख मोरि मोरि करत उहूँ उहूँ ८१॥

सवैया॥ छगाहीं छगा दौरैं दुरै दरशो छबिपुंज किशोर जमासे करै। अति दीन बिना पिय जान जिये विरहीन हिये बरमासे करै। अरु देखी भई कबहू थिरह्वै घनको हरिकी उपमासे करै। चहुंघाते महा तरपै बिजुरी तम तोममे आज तमासे करै ८२ गरजे घन दौरि रहे लपटाइ भुजा भरिकै सुख पागी रहैं। हरिचन्दजू भीजि रहैं हियमें मिलि पौन चले मद जागी रहैं। नभ दामिनिके दमके सत-